च तु र्थ अ ध्या य

' मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ '

'मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

साठोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में जिन उपन्यासकारों ने जीवन के यथार्थ स्वरुप को परिभाषित किया और मानव संबंधों को प्रस्तुत करके नये - पुराने मूल्यों के टकराव से उत्पन्न पीडा से आधुनिक बोध को प्रस्तुत किया उनमें मोहन राकेश का नाम उल्लेखनीय है। राकेश का औपन्यासिक मानस एक ऐसा दर्पण है - जिसमें स्वातंत्र्योत्तर समाज की विभिन्न छवियों के रंग दिखायी देते हैं। मध्यवर्गीय समाज की तस्वीर राकेश के उपन्यासों में दिखाई देती है। राकेश का उपन्यास साहित्य त्रिपदीय है। उसमें एक ओर आजादी, देश के विभाजन और स्वतंत्र भारत की कतिपय समस्याओं का चित्रांकन है तो दूसरी ओर राजनैतिक और नैतिक संदर्भ भी मिलते हैं। कहीं पर व्यक्ति और उससे संबंधित समस्याओं को भी उभारा गया है।

मोहन राकेश के तीनों उपन्यासों में मानव जीवन के विविध पहलू, स्त्री-पुरुष के बनते बिगड़ते संबंध और उससे उत्पन्न द्वंद्व और प्रतिद्वन्द उभर आये हैं। मोहन राकेश के तीनों उपन्यासों में विभिन्न समस्याओंका चित्रण दिखाई देता है। लेखक ने यह अनुभव किया है कि वर्तमान जीवन समस्याओं से घेरा हुआ है। आज जीवन में ऐसी अनेक समस्याएँ उभरी हैं कि जिनको सुलझाना बडा कठिन हुआ है। मोहन राकेश ने, वर्तमान जीवन की विभिन्न समस्याओं पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की है। अपने उपन्यासों में उन्होंने जिन समस्याओंका चित्रण किया है उनपर यहाँ साधार विवेचन किया जाता है।

मकान - समस्या —

आजादी के बाद औद्योगीकरण के कारण देहाती लोग शहर के प्रति आकर्षित हो गये। फलत: शहर में और महानगर में मकान की समस्या खडी हो गई। मोहन राकेश ने अपने उपन्यासों में इस समस्या को भी रुपायित किया।

राकेश ने दिल्ली को 'अँधेरे बन्द कमरे' का केन्द्र बनाया है। इसलिए

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

स्वाभाविक है कि बडी संख्या में पात्र यहाँ आये हैं। ठकुराइन के लेखक ने कस्साबपुरा की झोपडी कॉलनी को चुना है। ठकुराइन का असली नाम सरस्वती है। उसके व्यक्तित्व में आत्मीयता, प्रेम और सहानुभूति भरी है।

कभी-कभी रात की खामोशी में एक आवाज कोठरी की घुटन को कुछ कम कर देती थी। घर की ऊपरी मंजिल पर बुड्ढा इबादत अली कभी-कभी आधीरात को सितार बजाने लगता था। इबादत अली उस घर का मालिक था, मगर वह वहाँ किरायेदारों से बदतर हालत में रहता था। इबादत अली की बीबी एक वर्ष पहले गुजर चुकी थी और खुरशीद के अलावा उसको जो एक लड़का हुआ था, वह भी चार साल होने से पहले ही चल बसा। विभाजन से पहले वह खुद खुरशीद के साथ घर के उस हिस्से में रहता था जो अब ठकुराइन के पास था, और बाकी हिस्सों में मुसलमान किरायेदार रहते थे। इबादत अली पाकिस्तान जाकर लौट आता है, पर इस बीच --

' ठकुराईन जैसे लोग उसके मकान पर कब्जा कर लेते हैं। '[१]

सन सैतालिस के सितम्बर महीने में हुए दंगों में जब घर के सब किरायेदार घर खाली करके चले गये, तो आसपास के लोगों के विश्वास दिलाने पर भी कि जब तक वे वहाँ हैं, कोई उसका बाल बाँका नहीं कर सकता वह निश्चिंत नहीं हो सकता था और एक शाम चुपचाप घर छोड़कर अपनी लड़की के साथ वहाँ से चला गया था। इस बीच पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू शरणार्थियों ने उसके घर पर कब्जा कर लिया। तीन महीने लाहौर में रहकर जब उसका दिल वहाँ किसी तरह नहीं लगा तो एक दिन फिर वह दिल्ली लौट आया --

' उसने शायद यह नहीं सोचा था कि उसके अपने घर में ही उसके लिए जगह खाली नहीं है। '[२]

उसने देखा कि घर में आये हुए मेहमान अब उस घर के मालिक बने हुए हैं। वह कुछ दिन पीछे की गली में मस्जिद कस्साब के यहाँ रहा। बाद में कस्टोडियन के

---

१ डॉ. मीना पिंगलापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.११४

२ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.२२।

अर्जियाँ दे देकर उसने किसी तरह घर का ऊपर का हिस्सा खाली कर लिया और अपनी लड़की के साथ वहाँ रहा ।

कस्टोडियन का फैसला था । उस घर के किरायेदार किराया इबादत अली को ही देंगे इसलिए हर तारीख को इबादत अली की बेटी खुरशीद कापी-पैंसिल लिये हुए एक एक कमरे में जाकर वारंट लेकर आये सिपाही की तरह कहती थी --

'बराये मेहरबानी किराया अदा कर दीजिए ।' [१]

उस मकान में रहनेवाली स्त्रीयाँ इस बात पर बहुत गुस्सा करती थीं । वे स्त्रियाँ कहती थी कि आदमियों की तनख्वाह अभी मिली नहीं, किराया कहाँ से दे ? खुरशीद चुपचाप सुनकर चली जाती है और अन्त में कह देती है कि आज पहली तारीख है, आप किराया दे दीजिए । उससे किराये के लिए मोहलत माँगी जाये ।

इस तरह आजादी के बाद शहर में मकान की समस्या कैसी जटील होती जा रही है इसका चित्रण मोहन राकेश ने जगह जगह किया है । शहर में सब लोग मकान के मालिक नहीं होते बहुत से लोगों को किराये के मकान में रहना पड़ता हैं । कभी कभी यही किराये के लोग अनाचार और दुरव्यवहार करते है । इसके बारे में अँधेरे बंद कमरे कि ठकुराईन अपना अनुभव बताती है --

'घर में जवान लड़की तो मैया काँच की इमारत होती है, वह फिर बोली । इसे टूटते कितनी देर लगती है ? कोई बात भी कह दे, तो माँ-बाप का मरना हो जाता है । मैं इसीलिए अब आगे की कोठरी में कोई किरायेदार भी नहीं रखती । एक को साधु-महात्मा समझकर रख लिया था, तो वह भी एक ही मुस्टंडा निकला । ये देखो, दीवारों पर उसी महात्मा ने अपना चरित्तर लिख रखा है । सेवरे-शाम राम नाम का जाप करता था और धूनी रमाता था । मैं सोचती थी घर में इतना धरम-करम होता है, तो उसका कुछ फल हमें भी मिलेगा । मैं क्या जानती थी कि फल मिलेगा तो ऐसा कि बस याद रहे । ऊपर से तो धरम-करम और अन्दर से मुये का दिल भी धूनी

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बन्द कमरे - पृ.२३ ।

की लकडी की तरहकाला, मुआ लडकी को रातदिन बेटी-बेटी कहता था और दोनों टेम धूनी की राख इसके माथे पर लगता था । मगर एक दिन उसने वह करनी की कि ठाकुरसाहब होते,तो जूते मार-मारकर मथे की चमडी उधेड देते । पहले लडकी के माथे पर राख लगायी और फिर उसके मुँह को पकड लिया और उसकी बाँह खींचने लगा । लडकी बाँह छुडाकर भागती हुई मेरे पास आयी और कहने लगी कि अम्मा, इस बाबाजी को आज ही घर से निकाल दो । मैं सारी बात समझ गयी । मैंने कहा कि शोर मचाऊँगी,तो अपनी लडकी पर ही बात आयेगी । इसलिए मैंने ऊपर से तो चुप साध रखी मगर उस मुझे से उसी बरक्त कह दिया कि हमारे घर के लोग बाहर से आनेवाले हैं, इसलिए दिन चढते ही अपना बोरिया लेकर यहाँ से चला जाये । मुये को डर था कि यहाँ रहा,तो जूते ही न खाने पडें,इसलिए उसने जरा चूँचरा नहीं की और दूसरे दिन सवेरे ही यहाँ से चला गया ।' [१]

'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यासका दूसरा पात्र है इबादत अली,जो कि पाकिस्तान से यहाँ आया है । ठकुराईन उसके मकान में रहकर भी इबादत अली से लडती - झगडती है । गाँव के सब मरदों से इकट्ठा करके इबादत अली की और भडकाती है । इबादत अली को खुरशीद नामक एक बेटी थी है । इन सब गाँववालों की धमकीयों से डरकर अपने बाप को छोडकर बिना बताएँ रातों-रात भागकर चली जाती है । वह दिन भर माथा पीट पीटकर रोता रहता है । कई दिनों के बाद मियाँ रोटी कसाइयों के ढाबें में जाकर खाता है । कई बार तो सारी सारी रात सितार बजाने में लगा रहता है । जैसे अपने साथ दूसरों की नींद से भी दुश्मनी हो । मगर अब कोई उससे कुछ कहता नहीं है । वह भी इस घर में किसी से बात नहीं करता सिर्फ महीने में एक बार किराये की कापी लेकर सबके दरवाजे पर आ खडा होता है । इस मियाँ के बारे में ठकुराईन कहती हैं --

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.३११-३१२ ।

' किराया तो मैं कहती हूँ कि जिस दिन यह मरेगा, उस दिन भी लोगों से इकट्ठा करके साथ में अपनी कब्र में ले जायेगा। मुआ किराया वगैरा कुछ नहीं छोड़ेगा।' [१]

आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण मोहन राकेश के पात्र बड़ी मुश्किल से मकान का किराया आदा करते है। किराया देते समय उनकी नाक में दम आता है। 'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास में ठकुराईन कहती है -- 'मेरे सिर पर तो पहले ही छः महीने का किराया चढ़ा हुआ है। ठाकुरसाहब के बाद से हम दो बक्त रोटी मुश्किल से खाती है, किराया कहाँ से दें ?'

मधुसुदन 'अँधेरे बंद कमरे' इस उपन्यास का एक विशिष्ठ पात्र है। दिल्ली जैसे महानगर में धन के अभाव के कारण अत्यंत गन्दी बस्ती में भी किराये का मकान लेकर लोगों को विवश होकर रहना पड़ता है, जहाँ पानी कि किल्लत, जगह कि किल्लत, बदबू आदि को बरदास्त करना पड़ता है। मोहन राकेश के 'अँधेरे बंद कमरे' में मधुसुदन जिस मकान में रहता था वह इसी तरह का था। उस कस्सबेका वर्णन लेखक ने इस तरह किया है -- मूलत: वह कसबे का आदमी है। उसे नौकरी बंबई, दिल्ली, लखनऊ आदि सभी जगह करनी पड़ी। अपनी विपन्नता के कारण दिल्ली में कस्साबपुरा जैसी अत्यंत गन्दी बस्ती में रहने को बाध्य होता है।

'न आनेवाला कल' उपन्यास में भी मकान की समस्या की तरफ लेखक ने इशारा किया है इस उपन्यास का पात्र जब तक नौकरी करता था तब तक उसे रहने के लिए कौटर मिला था, किन्तु जैसे ही उसने नौकरी का इस्तीफा दे दिया, उसे वह मकान छोड़ना पड़ा यहाँ उसके जीवन में मकान समस्या फिर खड़ी हो गई। उसकी पत्नी शोभा के पिता भी किराये के मकान में रहते है। जब उनका तबादला होता है तब उन्हें दुसरे गाँव में जाकर रहने के लिए किराये का मकान लेने के शिवाय दूसरा कोई चारा नहीं है।

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.३१४।

'अंतराल' उपन्यास में भी मकान की समस्या पर प्रकाश डाला है। इस उपन्यास की नायिका श्यामा, बीजी की समझदारी में बंबई में फ्लैट खरीदना चाहती है। श्यामा पूना का मकान बेचकर वह बंबई मे रहती है और चाहती है कि अपना खुद का मकान हो। किन्तु मकान बनाने के लिए फ्लैट खरीदना होता है परंतु फ्लैट खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते। मकान के समस्या के पीछे यहाँ राकेश ने नीर्धनता की ओर संकेत किया है धन के अभाव के कारण राकेश के उपन्यासों में अधिकांश पात्र अपना मकान नहीं बना पाये। इसलिए प्राय: वे किराये के मकान में ही रहते हुए नज़र आते है।

नौकरी समस्या --

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में भी मोहन राकेश ने नौकरी कि समस्या पर प्रकाश डाला है, किन्तु यहाँ यह समस्या अलग रुप में चित्रीत कि गई है इस उपन्यास का नायक है हरबंस। वह बेकार तो नहीं हैं। वह इतिहास विषय का लेक्चरर है किन्तु उसकी यह नौकरी पार्टटाईम है वह स्वयंम फुलटाईम लेक्चरर बनने कि सोचता है।

इसी उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है मधुसूदन। मधुसूदन भी नौकरी कि समस्या से ग्रस्त था। नौकरी नहीं थी इसीलिए तो वह नौकरी के हेतू पहले बंबई चला गया था बाद में नौकरी मिल जाने के कारण उसकी भटकती खत्म हो गयी थी।

इस उपन्यास का तीसरा महत्वपूर्ण पात्र है अरविंद जो कि मधुसूदन का मित्र है। कस्साबपुरा के उस मुसलमान मुहल्ले मे एक टूटे फूटे घर में नीचे की दो कोठरियों पर कब्जा किया हुआ था जिनमें से आगे की कोठरी में अरविंद रहता था। अरविंद ठकुराईन के घर में खाना खाता था। एक दिन ठकुराइन अरविंद से पूछति है कि क्या सोच रहे हो अरविंद ? तब अरविंद ठकुराइन को जबाब देता है कि -- 'नौकरी की बात सोच रहा हूँ।' [१]

---

१ मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे - पृ.१९।

अरविंद ठकुराइन से कहता है कि बेकार आदमी हर वक्त एक ही बात सोचता है। अरविंद भी निराश होकर करवट बदल लेता है। बहुत जल्दी ही उसके कम्बल से खर्राटे भरने की आवाज सुनाई देने लगती है। वह देर तक जागता हुआ आनेवाले कल की बात सोचता रहता था। उन दिनों एक एक दिन वह बहुत मुश्किल से काट रहा था। 'इरावती' के दफ्तर में डेढ़ दो सौ की नौकरी मिलने की उसे आशा थी, लेकिन सम्पादक महोदय हर रोज चाय कॉफी पिलाकर उसे विदा कर देते थे और निश्चित बात का कुछ पता नहीं देते थे। जितनी देर अरविंद सम्पादक के पास बैठा रहता उनसे बात करता उतनी देर उसे यही लगता कि कल नहीं तो परसों से वह नौकरी उसे जरुर मिल जायेगी। मगर दफ्तर की सीढ़ियाँ उतरते ही उसके मन पर निराशा का भूत सवार हो जाता था।

मोहन राकेश ने 'न आनेवाला कल' उपन्यास में नौकरी कि समस्या का चित्रण उपन्यास के नायक मनोज सक्सेना के माध्यम से किया है। मनोज सक्सेना इस उपन्यास का केन्द्रिय पात्र है। यहाँ नौकरी की समस्या अलग रुप में दिखाई देती है। मनोज बेकार तो नहीं था किन्तु जिस स्कूल में वह नौकरी करता था उस स्कूल का वातावरण उसके मनोनुकूल नहीं था अत: वह नौकरी से इस्तिफा देता है। मनोज सक्सेना के बारे में डॉ.रमेशकुमार जाधव लिखते है --

> 'मनोज सक्सेना अकेलेपन से ग्रस्त एक ऐसा पात्र है जो अपने आपकी सारी स्थितियों घटनाओं एवं व्यक्तियों से मुक्तकर लेने की छटपटाहट में जी रहा है।' [१]

अलग रुप से क्यूँ न हो लेकिन इस उपन्यास में भी राकेश ने नौकरी कि समस्या को प्रकट किया है।

असफल दाम्पत्य जीवन की समस्या --

मोहन राकेश के सभी उपन्यासों में असफल दाम्पत्य जीवन प्रकट किया है। दाम्पत्य जीवन में प्रेम, समनवय की भावना, सम्पूर्ण की भावना, और समझदारी आदि का अभाव हो तो दाम्पत्य जीवन जहरिला बन जाता है। दाम्पत्य जीवन की समस्या पर मोहन राकेश कि दृष्टि प्रधान रुप से केन्द्रित है।

---

१ डॉ.रमेश कुमार जाधव - मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व-पृ.६५।

मोहन राकेश के 'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास का नायक है हरबंस और नायिका है नीलिमा। हरबंस और नीलिमा प्रस्तुत उपन्यास में पति-पत्नी की अपेक्षा स्त्री-पुरुष रुप में दृष्टिगत होते हैं। विवाहित जीवन के संदर्भ में आधुनिकता बोध एक नया सम्बन्ध 'अँधेरे बंद कमरे' में हरबंस नीलिमा में उभारता है जो आधुनिकता की चुनौती का परिणाम है।

मोहन राकेश आधुनिक भारतीय मध्यवर्ग के स्त्री-पुरुष के नये सम्बन्धो का विश्लेषण भी करना चाहते है और यह उनका प्रिय विषय है। इसलिए आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली नीलिमा व्यर्थ की भावुकता में नहीं बहती है। हरबंस और नीलिमा इन दोनों की रुचियाँ भिन्न हैं। नीलिमा नृत्य करना चाहती है, किन्तु हरबंस के चाहने पर वह स्वयं को चित्रकला की ओर मोड देती है। हरबंस अध्यापक बनना चाहता है। नीलिमा को यह बात अच्छी नहीं लगती। जैसे शुक्ला के बच्चे के जन्मदिन पर उसका व्यवहार दो पृथक - रुचियाँ, तनावों को जन्म देता है। पूरे उपन्यास में नीलिमा और हरबंस के सम्बन्धो की यह त्रासदी मौजूद है।

एक दिन हरबंस और नीलिमा का आपसी झगडा हुआ और हरबंस घर छोडकर लंदन चला गया। हरबंस ने लंदन से एक पत्र नीलिमा को भेज दिया। हरबंस अकेलेपन की स्थिति को महसूस करता है —

"मेरी मन:स्थिति इस समय बहुत विचित्र हो रही है। एक तरफ देखता हूँ, तो हम लोगों के सहजीवन की यन्त्रणा और प्रताडना नजर आती है और दूसरी तरफ यह निकलता हुआ सूनापन है - भीड से लदी हुई दुनिया के बीच अपना अकेलापन मेरा दिमाग बिलकुल खाली हो गया है और स्नायु बिलकुल जड हो रहे हैं। यहाँ आकर मे पहले से भी अधिक अस्थिर हो उठा हूँ। एक भी रात मुझे ठीक से नींद नहीं आयीं। जिस घर में मैं ठहरा हूँ, वह मम्मी, मिसेज चावला, ने पहले से लिया हुआ था। उन्होंने कहा है कि मैं अपना प्रबन्ध करने तक उनके पास रह जाऊ। यह शायद उन फूलों की वजह से है जो मैंने उनकी लडकी को दिये हो। वे रोज मुझसे पूछती है कि बंस, तुम्हारी बीवी कब आ रही है। मैंने जहाज पर उनसे कहा था कि तुम्हें एक

खास काम से पीछे रुकना पड़ा है और तुम बहुत जल्द ही यहाँ आ रही हो। उनकी लड़की चाय पीते समय खामोश आँखों से मेरी तरफ देखती रहती है। मुझे लगता है कि दुनिया में जितना अकेला मैं हूँ, शायद उतनी ही अकेली वह भी है। खिड़की के पास बैठे हुए मुझे लन्दन का सारा कोहरा और धुआँ उसकी आँखों में समाया नजर आता है।'[१]

एक दिन नीलिमा अपने पति से आकर कहती है - कि हाई कमीशन के कार्यालय में उसकी प्रसिध्द नर्तक उमादत्त से भेंट हुई है उमादत्त की पार्टनर उर्वशी उसे छोड़कर भारत चली गई है और उमादत्त चाहता है कि मैं उसके साथ उर्वशी की जगह यूरोप के दौरे पर चलूं। परंतु हरबंस नहीं चाहता कि नीलिमा उमादत्त के साथ युरोप जाये। वह नीलिमा से कहता है —

'मगर तुम नहीं जा रही हो तुम कैसे जा सकती हो ?'[२]

नीलिमा गुस्से में आकर अपने पति हरबंस से कहती है —

'मैं क्यों नहीं जा सकती।'[३]

इसके उपरान्त हरबंस उसे बताता है —

' मगर मैं नहीं चाहता कि तुम उमादत्त के या किसी और के ट्रुप के साथ इस तरह बाहर जाओ। मुझे यह अच्छा नहीं लगेगा।'[४]

यहीं पर दाम्पत्य जीवन कि समस्या को राकेश ने चित्रित किया है। डॉ. घनानन्द जदली के अनुसार —

> 'इसमें स्त्री पुरुष सम्बन्धों की दरारों की पहचान विशेष रुप से उभरी है।'[५]

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१२० ।
२ - वही - -वही - पृ.१८१ ।
३ - वही - ,, पृ.१८१ ।
४ - वही - ,, पृ.१८१ ।
५ डॉ.घनानन्द जदली - मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.३१८ ।

समग्र उपन्यास में हरबंस और नीलिमा का तनाव और अन्तर्द्वन्द्व छाया हुआ है। हरबंस को नीलिमा से उतनी चिढ़ नहीं जितनी उसकी राह से है। गलतफहमियों की जड़ों के बढ़ते बढ़ते आखिर दूराव आ जाता है।

हरबंस नीलिमा से कहता है - मैंने तुम्हारे लिए इस तरह की जिंदगी की बात आज तक नहीं सोची। नीलिमा हरबंस से कहती है मैं कुछ भी कर सकती हूँ मेरी अपनी जिंदगी तो कुछ न कुछ है। मगर तुम मुझे जाने से जबरदस्ती से रोकोगे,तो मैं तुमसे कहे देती हूँ कि मैं वैसे ही चली जाऊँगी और कभी तुम्हारे पास लौटकर नहीं आऊँगी। हरबंस नीलिमा से कहता है कि 'देखो, एक बार फिर सोचलो। तुम्हें इस तरह की जिंदगी अपनाकर बाद में पछतावा भी हो सकता है।' [1] हरबंस निलिमा से कहता है —

> 'देखो नीलिमा तुम मुझे गलत मत समझो। मैं तुम्हारे नृत्य के प्रदर्शन के खिलाफ नहीं हूँ मगर मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा इस तरह के लोगों के साथ ज्यादा आना जाना हो। मैं चाहता हूँ की इस कला का अभ्यास करके फिर अपना प्रदर्शन करो।' [2]

नीलिमा की हर छोटी-बड़ी बात में प्रतित होता है कि वह किसी घिसी पिटी लकीर पर नहीं चलेगी। उसकी हर बात में, अपने खुदके अस्तित्व में भी एक उन्मुक्तता थी।

> 'उसकी हँसी में ही नहीं,बातचीत और चलने के ढंग में एक उन्मुक्तता थी जो उस व्यक्ति को काफी चौंका सकती थी।' [3]

सिगरेट पीना,पति को एक वचनी संबोधना आदि इसके निर्देशन हैं। मनपर झूठे लिबास ओढे जाना उसे पसंद नहीं। जो मन में है उसे वह खुल्लम खुल्ला प्रकट करना चाहती है। किसी तरह का दुराव छिपाव उसमें नहीं है। अपनी स्वतंत्रता की वह स्वीकृति है और यही बात हरबंस को जँचती नहीं; उनके आपसी सम्बन्धोंका तनाव यही से शुरु होता है। नीलिमा पत्नीत्व से अधिक कलाकार के रुप में स्वतंत्र्य व्यक्तित्व की स्थापना के लिए जूझने लगती है और खुलकर

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१८२।
२ - वही - - वही - पृ.
३ - वही - ,, पृ.१२७।

जीना चाहतीहै। हरबंस अपनी इच्छाओं को उस पर लादता है। वह चाहता है कि सच्चे मित्र के रुप में नीलिमा उसके साथ बनकर रहे।

एक दिन हरबंस नीलिमा को पत्र भेज देता है। उस पत्रमेंहरबंस कहता है — " मैं उस दिन चिट्ठी लिखने इसीलिए बैठा था कि तुम्हें तुम्हारे जन्म-दिन के अवसर पर अपना स्नेह भेजूँ मगर लिखते लिखते वह बात भूल गया। मगर भूलने से ही तो इसकी व्याख्या नहीं होजाती। क्या तुम चाहोगी कि मैं मनोविश्लेषक से इस सम्बन्ध में परामर्श करूँ और उससे पूछूँ कि इसका क्या कारण हो सकता है ? मगर मुझे सचमुच बहुत बहुत अफसोस है। मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हें उस दिन कितना दु:ख हुआ होगा। मुझे आशा है कि तुम इसके लिए मुझे क्षमा कर दोगी। पिछले दो सवा दो साल में तुमने पहली बार वह बात लिखी है जो मैं बुहत दिनों से तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता था तुमने लिखा है तुम अपने को मेरा सबसे बड़ा हितचिन्तक और मित्र मानती हो। मैंने आज तक जीवन में मित्रता से बड़ा कोई संबंध नहीं माना, हालाँकि एक भी ऐसा व्यक्ति मुझे नहीं मिला जिसे मैं अपना सच्चा मित्र कह सकूँ। यदि तुम सचमुच ही मेरी सच्ची मित्र बन सको, जो कि तुम लिखती हो कि तुम हो,तो हमारे बीच किसी तरह की कोई रेखा नहीं रहेगी।"[१]

लेकिन नीलिमा जीवन के रंग में रंगकर जीना चाहती है। जीवन के प्रति उसके बड़े बड़े सपने तथा हौसले हैं। शिक्षित तथा समर्थ आधुनिक होने के कारण पति द्वारा लगाये बंधनों से वह खिजती जाती है। एक दिन हरबंस नीलिमा से लंदन बुलाता है और नीलिमा चली जाती है। वहाँ भी दोनों एक दूसरे के साथ अच्छी तरह एडजस्ट नहीं हो सकते। दोनों न एक-दूसरे के बिना रह सकते न एक-दूसरे को सह सकते। नीलिमा संस्कृति के पुराने मूल्यों के,आस्थाओं के बंधनों में बंधना नहीं चाहती।

मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१२७

एक दिन पेरिस में बर्मी कलाकार से उससे मुलाकात होती है। नीलिमा एक हद तक बर्मी कलाकार को अपनाती है। बर्मी कलाकार के रुप में वह जीवन की एक संभावना देखती है जिससे अपने विचारों को पूर्णत्व दे पाये। बर्मी कलाकार अपनी बदचलन पत्नी को भूल चूका है। यह जानकर नीलिमा का विवेक उसे इस ओर देता है और वह हरबंस के पास वापस आती है। भारतीय स्त्री का अलगाव यही स्पष्ट होता है। वर्तमान समाज एक संक्रमण के दौरे से गुजर रहा है। मोहन राकेश ने इसके जरिए यही स्पष्ट किया है।

नीलिमा अपने वैयक्तिक उत्कर्ष के लिए लड़ती झगती है। सफल वैवाहिक जीवन संघर्ष पर नहीं समझौते पर अवलम्बित रहता है। कला प्रेमी हरबंस कला का केवल प्रदर्शन व्यावसायिक रुप नहीं चाहता। पति पत्नी के टूटते संबंध और फालतू होती जिंदगी का आभास लंदन से लौटने के बाद भी होता रहता है। हरबंस का हर बात के पीछे दिखाई देनेवाला ` शक ` उसे बेजार कर देता है। आज की विकसित नारी पति से भी विश्वास और सहयोग की माँग करती है। पति के हर छोटे मोटे प्रसंग के पीछे संदेहपूर्ण दृष्टि नीलिमा को उबकाई लाती है।

पेरिस से लौटने के बाद वह घर आकर वह अपने पति से मिलती है और अपने पति से बात करती है

> ` मैंने सोचा था कि पेरिस में ही रह जाऊँगी। वहाँ रहकर पाश्चात्य नृत्य सीखूँगी और अपने को वहाँ के जीवन में ही खो दूँगी। मगर फिर मुझे लगा कि मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।' [१]
>
> ' नीलिमा को बर्मी कलाकार का ध्यान हो जाता है। वह सोचता है कि कहीं उसे बातों से झुठलाने का प्रयत्न तो नहीं किया जा रहा। नीलिमा कुछ क्षण खामोश रहती है। फिर कहती है, मैं तुम्हें सब-कुछ सच बता देना चाहती हूँ। मैंने सोचा था कि क्यों न मैं कोई ऐसा उपाय ढूँढूँ जिससे मुझे किसी भी रुप में तुम्हारे ऊपर निर्भर न रहना पड़े, न धन के लिए, न आश्रय के लिए और न वे - न वे

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.२०५।

भावना के लिए। तुम्हें पता चला होगा कि ट्रूप का एक और कलाकार भी मेरे साथ वहीं रह गया था। उसे दरअसल मैंने ही अपने साथ रोक लिया था। हरबंस उससे थोड़ा अलग अटकर कुहनी पर सिर रख लेता है। उसका भाव एक न्यायाधीश का-सा हो जाता है। तुम चाहते हो कि मैं - तुम्हें सब कुछ ठीक ठीक बता दूँ ?` नीलिमा पूछती है। हरबंस कहता है तुम सब कुछ ठीक बिलकुल ठीक-ठीक बता दोगी।` १

नीलिमा भी अपनी कुहनी पर सिर रखकर एक अभियुक्त की तरह उसके सामने हो जाती है। ` मैंने चाहा था कि मैं अपने मन से तुमसे मुक्त हो सकूँ और तुम्हें मुक्त कर सकूँ। मैंने चाहा था कि मैं तुम्हें एक बार धोखा दे सकूँ जिससे अपने को तुमसे अलग करने का मुझे एक कारण मिल जाये। मगर मैं ऐसा नहीं कर सकी। चाहकर भी नहीं कर सकी। वह फिर अपने चेहरे के लिए हरबंस के पसा का आधार ढूँढती है। मगर वह आधार उसे नहीं मिलता। हरबंस उठकर बैठ जाता है। तुम उठकर बैठ क्यों गये हो ? वह पूछती है। तुम्हे मेरी बात पर विश्वास नहीं है ?` मैं ऐसे ही बैठ गया हूँ, हरबंस कहता है। तुम बात करती रहो। मुझे लगता है कि तुमने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। ` तुम्हें ऐसे ही लगता है। तुम बात करती रहो। ` मैं तुम्हें पूरी बात बता चुकी हूँ। मैं उसके साथ कई जगह गयी थी - पूव में और सेन के तट पर घूमती रही थी। मैं अपने आपको एक उन्माद में खो देना चाहती थी। मगर मुझे लगा कि मेरा अपने पर वश नहीं है। मैं अपनी इच्छा से ही सबकुछ नहीं कर सकती। आखिर जब वह इस विश्वास पर पहुँच गया कि वह मुझसे जो चाहे प्राप्त कर सकता है, तो मैंने उसे अपने से दूर हटा दिया। तभी मैंने तुम्हें तार दिया था कि मुझे हवाई जहाज का टिकट और दस पौंड भेज दो। मैं जानती थी कि तुम्हारे पास पैसे नहीं है। मगर मैंने जान-बूझकर ऐसा तार दिया था। मैं देखना चाहती थी कि तुम मेरी कितनी जरुरत महसूस

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.२०५।

करते हो और मेरे लिए इतना कष्ट सहन कर सकते हो या नहीं। जब तुम्हारा तीन पौंड का मनीऑर्डर मिला, तो मेरा दिल फिर एक बार टूट गया।' [१]

नीलिमा और हरबंस के जीवन में शुरु से अंत तक मूल्यों की टकराहट हर बात में उभर आती है। अधिकारों से भी अधिक अपने उतरदायित्व की चेतना नारी को अधिक शोभा देती है। नीलिमा एक दिन पैरिस से लौटने के बाद भारत में अपना एक नृत्य प्रदर्शन करती है। पर ठीक नृत्य के दिन ही हरबंस के कठोर व्यवहार एवं झगडे के कारण नीलिमा का मन निराशा से भर गया अत: नृत्य प्रदर्शन असफल हो जाता है। नीलिमा के अनुसार इसकी वजह है हरबंस।

नीलिमा हरबंस से कहती है --

'तुम्हारी तरह मैं भी जिंदगी में न कुछ कर सकूँ और न ही कुछ बन सकूँ।' [२]

इस तरह के आरोप नीलिमा हरबंस पर हर वक्त की रुकावट के कारण लगाती है। भारतीय संस्कृति में पत्नी की मर्यादा, कर्तव्य और दायित्व पति से बढ़कर महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दृष्टि से नीलिमा कुछ अपूर्ण जान पड़ती है। कला निकेतन के असफल प्रयोग के बाद पति-पत्नी के बीच की दरार काफी बढ़ जाती है। प्रशंसकों, मित्रों तथा हितचिंतकोंके बीच होकर भी नीलिमा वैयक्तिक स्तर पर अकेली रह जाती है। जीवन में रिक्तता की अनुभूति बढ़ती जाती है। एक ओर अपनी उन्नत आकांक्षाएँ और दूसरी ओर सम्बन्धों की शून्यता इनके बीच वह खडी है।

नीलिमा अपने बच्चे को साथ लेकर स्वाभिमान के साथ माँ के घर चली जाती है। लेकिन पति के पागलपन की बात जानकर अपने घर वापस लौट आती है। दायित्व भरा जीवन जीने के लिए।

अन्तत: कहा जा सकता है कि नीलिमा राकेश के अन्य स्त्री पात्रों की तरह मानवीय सबलताओं एवं दुर्बलताओं का समन्वय है। अहं, अधिकार और

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.२०७।

२ - वही - ,, पृ.३४१।

आधुनिक विचार, इनका संघर्ष रिश्ते टूटनेतक खींचा जाता है लेकिन राकेश में जीवन के प्रति जो आस्था है,वह उन्हें टूटने नहीं देती । महत्वाकांक्षी नीलिमा के मन में अभी तक त्याग समझौता बाकी है जो लेखक के जीवन मूल्यों की विजय दर्शाते हैं। राकेश जी स्त्री को अनेक संघर्षों के बीच 'स्त्री' ही रखना चाहते हैं।

'न आनेवाला कल' यह राकेश जी का तीसरा उपन्यास है। इसमें भी असफल दापत्य जीवन की समस्या दिखाई देती है। इस उपन्यास का नायक मनोज सक्सेना है जो कि मिशनरी स्कूल में काम करता रहता है। शोभा अपना वैवाहिक जीवन सात साल तक जीकर पति की मृत्यु के बाद मनोज को स्वीकारती है। अपने पति से उसका बेबनाव या झगडा नहीं था लेकिन उसकी आकस्मित मृत्यु उसे नयी शुरुआत के लिए मजबूर करती है। मनोज दाम्पत्य जीवन की नीरसता तथा फादर बर्टन स्कूल के दमघोंटू वातावरण में असह्य बेचैनी और घुटन की यत्रणा को झेलता है।

मनोज का अलगाव भाव-बोध सतत बना हुआ है। फिर भी जुडे रहने की प्रक्रिया जारी है। मनोज और शोभा अपनी अपनी कमी को पूरा करने के लिए,अपने अकेलेपन को भरने के लिए शादी करते हैं। मनोज के साथ वह नयी जिन्दगी नये ढंग से शुरु करती है। फिर भी वे सच्चे अर्थ में पति-पत्नी नहीं बन पाते। दोनों के बीच शोभा का पहला पति हरमद उपस्थित न रहकर भी स्थित रहता है। मनोज जब भी शोभा को देखता था उसके पहले पति को भी देखता था। दोनों पतियों में तुलनात्मक भाव की मजबूरी शोभा के जीवन में फैली है। शोभा दो पतियों की तुलना करती है। ये ऐसी मजबूरियाँ हैं, जिन्हें झेलना या तोडना दो ही रास्ते शोभा के सामने रहते हैं। शोभा अपने अतीत से मुक्त न हो पाने के कारण मनोज के व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं कर पाती है दोनों भी औपचारिक जीवन जीने लगते हैं।

शोभा मनोज की भलाई के लिए उसे सिगरेट पीने से रोकती है लेकिन जानबुझकर जब मनोज ज्यादा सिगरेट पीता है तो वह भी जिद करती है, सिगरेट का पूरा कार्टन मेजपर रखकर शोभा पति की भलाई चाहती है। लेकिन उस पर एहसान जानकर इसी कारण पति के बारे में सुनी बाते कि वह बहुत

पीता है और उसे लडकियों में काफी इन्टरेस्ट है - झूठा साबित होता है तो शोमा को काफी निराशा होती है। हो सकता है, शोमा की जिंदगी में मनोज जैसा स्वतंत्र व्यक्तित्ववाला स्वाभिमानी पति न आकर उसकी हाँ में हाँ मिलानेवाला दूसरा कोई होता तो वह इतनी परेशान नहीं होती।

शोमा के मन की स्थिति दोलायमान रहती है। पुनर्विवाह करके उठाया गया कदम उसे अब गलत प्रतीत होता है। उसे लगता है —

> " अब तो जीने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है — न साधन, न संबंध न मान। तुम्हारे साथ अपने को छोडकर मैंने हर चीज से अपने को व्यंचित कर लिया है।" [१]

शोमा अपना स्वाभिमान छोडकर जीना नहीं चाहती। उसके मन में पति के लिए प्रेम है, वह चिढती है, लडती झगडती है उसे तर्कहीन, न्यायहीन और दुराग्रहपूर्ण कहती है फिर भी मन में उसके आने का इंतजार करती रहती है।

खोई हुई जिंदगी से शोमा मुक्त नहीं हो पाई थी। इसीलिए उसकी आँखों में वह शहीदाना भाव दिन में कई - कई बार नजर आता था मनोज अकेलेपन से जीने का आदि हो चुका था। उसे शोमा के साथ जी पाना भारी लग रहा था। शोमा और मनोज दोनों पति पत्नी एक दूसरे को स्वीकार न कर पाने के कारण अभिशाप्त दाम्पत्य जीवन की यंत्रना को भोग रहे थे।

मनोज के स्कूल के कार्यक्रमों से शोमा अन्दर ही अन्दर चिढती रहती थी। शोमा ने मनोज पर अप्रत्यक्ष रुप से स्वार्थी, दम्भी और हठी होने का आरोप भी लगाया था। मनोज के साथ शोमा का दाम्पत्य जीवन इतना अधिक तनावग्रस्त था कि यदि रात को एक दूसरे को छू जाते तो ' सॉरी ' कहकर औपचारिकता व्यक्त करते थे। जीवन में स्वाभाविकता के बदले औपचारिक जीवन का बोझ शोमा न ढो पाई इसीलिए वह मुरझा गई। आधुनिक काल में नारी को मिली आजादी और उससे प्राप्त ढाढस शोमा में पूरी तरह से मौजूद है।

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१०६।

`अंतराल` एक ऐसे स्त्री और पुरुष के बीच के सम्बन्धों की कहानी है, जिन्हें कोई नाम नही दिया जा सकता । `अंतराल` बम्बई के व्यस्त जीवन में जुझते कुमार और श्यामा की रिक्तता की खोज और अकेलेपन के अन्तराल को भर पाने की कशमकश की कहानी है ।

डॉ.रमेशकुमार जाधव के अनुसार पुस्तक के बाह्य आवरण पर छपी निम्न पंक्ति कथावस्तु को उजागर करती है —

> " कुछ संबंध ऐसे भी होते है जिन्हें कोई नाम नहीं दिया जा सकता । परन्तु ये नाम हीन सम्बन्ध कई बार अन्य सम्बन्धो की अपेक्षा कही सुक्ष्म और गहरे होते हैं । "[१]

यह `अंतराल` स्त्री श्यामा और पुरुष कुमार के बीच अनाम संबंध की कहानी है । यह अंतराल श्यामा और देव के बीच का है । यह `अंतराल` कुमार और लता के बीच का है । यह अंतराल कुमार और उसकी पत्नी के बीच का है । अंतराल भरना तो सब चाहते हैं लेकिन भर नहीं पाते ।

`अंतराल` उपन्यास का नायक है कुमार और नायिका है श्यामा । श्यामा को जीवन में छे वर्ष का दाम्पत्य जीवन मिला, जिसे वह समर्पित होकर स्वीकार नहीं कर पाई थीं, उसका पहला पती देव अब नहीं था फिर भी वह उसे माफ नहीं कर पाती । उसका जीवन रिक्तता का अन्तराल घुटन,अकेलेपन, ऊब और छटपटाहट से भर जाता है । कुमार के जीवन में लता नामक लडकी आई थी,जिसके साथ उसने घर बसाने के स्वप्न देखे थे । लेकिन स्वप्न साकार न हो पाने से उसके अन्तर में जो रिक्तता पैदा हो चुकी है उससे वह मुक्त नहीं हो पाता । यद्यपि नामहीन सम्बन्धो के साथ श्यामा और कुमार निकट आते हैं । श्यामा स्वयं को पूरी तरह खोलकर अपने आपको उसके सामने रख देती है तो वह पूरी तरह सहानुभूती और सहृदयता से उसे स्वीकार करता है । वह दो बार श्यामा को बाहों में भरता है । अपने होठोंसे उसके होठों को ढक लेता है । कुमार का यह व्यवहार अस्वाभाविक नहीं है।श्यामा भी इस स्थिति के लिए उतनी उत्तरदायी है । यह अन्तराल ही दोनों के एकान्तिक जीवन की नियति है ।

---

१ डॉ.रमेशकुमार जाधव,- मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.५२ ।

विमला कुमारी पण्डिता लिखती है कि —

" मानव जीवन के सम्बन्धों की कहानी अत्यन्त मनोहर एवं सुन्दर रूप में चित्रित है। कुछ सम्बन्ध ऐसे है जिनके प्रति कोई मोह नही है।" [1]

श्यामा एक आधुनिक टूटी हुई अपने ही अहं से घिरी कुण्ठाओं से ग्रस्त नारी चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। एक दिन कुमार कस्बा छोड़कर बम्बई जा चुका है और कुछ समय बाद श्यामा का पत्र उसी के पास लौट आता है। श्यामा बम्बई जाकर कुमार से मिलने का प्रयास करती है कुमार को मिलने के लिए उसके घर जाती है। घर पर श्यामा और कुमार की भेंट होती है। कुमार बताता है कि उसने इस बीच विवाह भी कर लिया था, पर पति-पत्नी की बनी नहीं और वह अलग हो गई। कुमार अकेलेपन से ग्रस्त है। —

" इस क्षण में कुमार श्यामा फिर निकट आना चाहते हैं, पर श्यामा के व्यक्तित्व पर अब भी पति देव की छाया है। इसीलिए श्यामा और कुमार दोनों के सम्बन्ध स्थायी नहीं हो पाते।" [2]

दोनो में 'अंतराल' बना रहता है।

श्यामा एक दिन कुमार को घर बुलाती है। श्यामा की मनचली नौकरानी सिन्दूरी को उसके रुपम की देखभाल करने के लिए कहती है। श्यामा और कुमार स्नेह के स्तर पर अभावग्रस्त है इसीलिए वे एक-दूसरे के पास आते हैं।

श्यामा और कुमार के सम्बन्धों को लेकर आदि से अन्त तक 'अंतराल' की कथा से गुजकर श्यामा और कुमार के रिश्तों को किस तरह परिभाषित किया जाय ?

डॉ.मीना पिंपळापुरे का कहना है कि —

" अंतराल' नारी - पुरुष सम्बन्धों की नयी तलाश का उपन्यास है।" [3]

---

१ विमला कुमारी पण्डिता - उपन्यासकार मोहन राकेश - पृ.५६

२ डॉ.मीना पिंपळापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.१३९

३ - वही - ,, पृ.१५८।

इस उपन्यास में दोनों मनोज और श्यामा एक दूसरे के करीब आते हैं। फिर भी उनके जीवन में 'अंतराल' ही बना रहता है। इस उपन्यास में इस समस्या से अलग रुप से दर्शाया गया है। इसको दाम्पत्य जीवन का 'अंतराल' कहना ही ठीक लगता है। इसमें अंतराल की समस्या को उजागर करना ही लेखक का उद्देश्य दीखता है।

निष्कर्षता असफल दाम्पत्य जीवन की समस्या राकेश के प्रत्येक उपन्यास में पायी जाती है।

प्रेम – समस्या —

प्रेम एक जटिल संवेग है, इसमें दया, सहानुभूति, ममता, वात्सल्य तथा सर्वाधिक रुपेण का संमिलिण होता है। प्रेम ही वह महत्वपूर्ण तत्व है जिसके आधार पर यह संसार स्थित है। समस्त सांसारिक संबंध इसी प्रेम के बल पर विद्यमान है, प्रेम के कारण ही व्यक्ति – व्यक्ति से संबंध बनाए रखता है, मिल जुलकर रहता है, परस्पर सहयोग देता है, दूसरों के दुख में दुखी एवम् सुख में सुखी होता है। अन्यथा इसके अभाव में सभी मानवीय संबंध कोरे हैं।

प्रेम के अभाव में व्यक्ति की आत्मा कुंठित और बुझी हुई हो जाती है। ऐसी स्थिति में उसे स्नेह की गरमाई की उष्णता की आवश्यकता होती है। प्रेम की महत्ता असीम है। स्नेह, करुणा, सहानुभूति और अनुकम्पा से जीवन पूर्ण नहीं बनता, वह प्रेम से पूर्ण बनता है।

प्रेम मानव मन की कोमलता मनोभावना है। विभिन्न व्यक्ति इसका विभिन्न रुपेण अनुभव करते हैं। विभिन्न दृष्टिकोन से देखते है एवं विभिन्न अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं कुछ प्यार को उदार बनानेवाला मानते हैं तो कुछ स्वार्थी बनानेवाला। यथार्थ में प्यार पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है। किन्तु आज के जमाने में प्रेम भी एक समस्या बन गया है।

'अँधेरे बंद कमरे' एक वातावरण प्रधान उपन्यास है। राकेश जी ने इस उपन्यास में भारत की राजधानी दिल्ली का सजीव चित्र खींचा है। इस उपन्यास का नायक है हरबंस और नायिका है हरबंस की पत्नी नीलिमा। इस उपन्यास में राकेश जी ने प्रेम समस्यापर प्रकाश डाला है। हरबंस दिल्ली में

एक कौलेज में इतिहास का प्राध्यापक है। वह नीलिमा से प्रेम विवाह करता है पर विवाह के बाद ही उसका प्रेम समाप्त हो जाता है और प्रेम के बदले कटुता आ जाती है। हरबंस प्रेम के दायरे में स्थित होकर भी एक स्तर पर अभिशाप्त जीवन बिता रहा है। उसकी पत्नी नीलिमा जाने-अनजाने जो भी करती है, उसमें हरबंस की प्रेरणा है। एक ओर तो वह अपनी पत्नी नीलिमा को आगे बढाना चाहता है। हरबंस एक ओर सहजीवन की यंत्रणा से भी अभिशाप्त है। नीलिमा खुले रूप से यह स्वीकार करती है कि जैसे हम दोनों पति-पत्नी न होकर एक - दूसरे के दुश्मन हैं। हरबंस के जीवन में अकेलापन है। हरबंस के चरित्र में जो पीडा का गहरा बोध है उसके पीछे उसकी घुटन, ऊब, अकेलापन है। पति-पत्नी के बीच प्रेम नहीं है और प्रेमहीन रति से बडा नरक कोई दूसरा नहीं हो सकता है। हरबंस और नीलिमा के बीच प्रेम के अभाव की बहुत बडी दीवार खडी है। हरबंस अस्थिरचित्त है और दृढता उसमें नहीं है। हरबंस सही निर्णायक नहीं है। हरबंस कहता है --

> " तुम्हारे साथ और तुम्हारे बिना दोनों ही तरह जिन्दगी मुझे असंभव प्रतीत होती है। "[१]

नीलिमा की रुचि नृत्य में है पर हरबंस की इच्छा पूरी करने के लिए उसे पेंटिंग करनी पडती है। हरबंस अपनी पत्नी नीलिमा के लिए तडप रहा है। हरबंस को कई दिनों के बाद नीलिमा का पत्र आया था और उसमें लिखा था --

> " प्रेम एक तरह की मान्यता है जो हम एक - दूसरे को देते हैं। "[२]

हरबंस कहता है --

> " मेरी नजर में प्रेम एक मान्यता से कहीं अधिक कुछ है। वह मान्यता पर रुकता नहीं, मान्यता से उसका आरम्भ होता है। मेरे लिए प्रेम दो आत्माओं के एक-दूसरे को समृध्द बनाने के अनवरत संघर्ष का नाम है, कभी न रुकनेवाले संघर्ष का। दो आत्माओं के सहयोग में ही उसकी पूर्ति नहीं है, उस स्थिति में उसमें एक जडता आ सकती है, एक सडाँध

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१३७

२ - वही - ,, पृ.१२७।

पैदा हो सकती है। उसमें तो दोनों का निरन्तर विकास आवश्यक है जिसके लिए उनके सामने एक ही विजन होना चाहिए। इसलिए मैं तुमसे यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मेरे विजन को मेरे हृदय की छटपटाहट को, कोई चीज रोकती है जिससे मेरे मन में एक जड़ता पैदा होती है, तो मेरे हृदय में प्रेम करने की योग्यता नहीं रह जाती।'[१]

'जहाँ प्रेम की रीढ न हो, वहाँ इनकी बात केवल एक झूठा खोल है, एक ढकोसला है।'[२]

एक दिन बर्मी कलाकार ऊबानू के साथ नीलिमा की मुलाकात होती है। नीलिमा ऊबानू से सवाल करती है कि तुम्हारा ब्याह तो हुआ होगा ऊबानू कहता है मेरा बचपन में ही विवाह हुआ था। ऊबानू नीलिमा से कहता है कि मुझे पता है तुम विवाहिता हो। लन्दन में मैंने तुम्हारे पति को भी देखा था। मगर तुम लड़की जैसी ही हो। नीलिमा ऊबानू से अपने हाथ से खेलने देती है। यह एक नये जीवन की शुरुआत है। वह उस दिन पैरिस में रुककर अपने सब बन्धनों से मुक्त हो गयी है। वह किसी चीज को अब अपने को नहीं बाँधने देगी।

नीलिमा ऊबानू से सवाल पूछती है कि तुम पैरिस में क्यों रुक गये हो। ऊबानू कहता है कि मैंने सोचा कि जिन्दगी में फिर कभी शायद यहाँ आना न हो, इसलिए यहाँ थोड़ा घूम लूँ। वह उसे अपनी बाहों में भर लेने का प्रयत्न करता है परन्तु वह उसकी बाहों से निकल जाती है। उसे लगता है कि जैसे सहसा उसके अन्दर की एक कोमल चीज पर किसी ने पाँव रख दिया हो। वह कहती है कि देखो, मैं जब तक तुम्हें इजाजत न दूँ, तब तक तुम मेरे साथ कोई ज्यादती नहीं करोगे। दोनों ही गम्भीर हो जाते हैं और अपनी - अपनी जगह कुछ सोचते हैं। अपने पति हरबंस की याद नीलिमा को आती है। वह अपनी पहली दुनिया में आना चाहती है। ऊबानू की दुनिया में नहीं जाना चाहती। वह पैरिस से वापस लौट आती है। हरबंस और नीलिमा के नये जीवन की शुरुआत फिर से

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१२७।

२ - वही - ,, पृ.१२८।

होती है। राकेश जी ने यहाँ पर प्रेम विवाह और परम्परागत विवाह में अन्तर बताया है। प्रेम विवाह हो या परम्परागत विवाह - दोनों में भी गुण दोष होते हैं। समाज में प्रेम विवाह को वह स्थान प्राप्त नहीं है जो परम्परागत विवाह को प्राप्त है।

'अँधेरे बंद कमरे' में शुक्ला और भार्गव जैसे पात्र भी आते हैं। इसमें शुक्ला का भार्गव से प्रेम होना और उस प्रेम में बढ़ती हुई खाई और अचानक एक दिन दोनों का अलग होना दिखाई देता है। नीलिमा चाहती है कि शुक्ला का प्रेम विवाह चित्रकार जीवन भार्गव से हो जो शुक्ला को चाहता है। नीलिमा चाहती है कि विवाह जीवन भार्गव से हो, क्योंकि वह भला आदमी है, पर हरबंस इस व्यक्तिसे चिढ़ता है और इसीलिए यह प्रेम विवाह हो नहीं पाता। आखिर शुक्ला का विवाह सुरजीत के साथ होता है।

सुरजीत एक पत्रकार है जो कि हरबंस के परिवारवालों से संबंधित है। सुरजीत इसके पूर्व दो दो विवाह कर चुका है और उसने पत्नियाँ छोड़ रखी हैं। सुरजीत भोली शुक्ला को अपनी बातों में बहकाकर उससे विवाह कर लेता है। हरबंस के अनुसार उसके लिए जिम्मेदार नीलिमा ही है।

इस उपन्यास में इसके साथ - साथ और दो पात्र है मधुसूदन और सुषमा श्रीवास्तव। दोनों एक - दूसरे से प्रेम करते हैं। मधुसूदन एक पत्रकार है। वह 'न्यू हेराल्ड' पत्र के सम्पादक मण्डल में काम करता है। एक पत्रकार की दृष्टि से वह अपने इर्द-गिर्द घटती घटनाओं को देखता है गरीबी अमीरी, राजनीतिक दाँव पेंच सभी से मधुसूदन का गहरा परिचय है। एक पत्रकार की हैसियत से वह बड़ों-बड़ों से सम्पर्क रखता है।

एक दिन अचानक उसका परिचय एक पत्रकार लड़की सुषमा श्रीवास्तव से होता है। जो कि आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। सुषमा जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण रखती है। उसे अच्छी तरह से देखती समझती है।

मधुसूदन और सुषमा काफी बातचीत करते है। सुषमा मधुसूदन से प्रेम विवाह करना चाहती है। आखिर सुषमा ही वह अपनी अँगूठी मधुसूदन को पहना देती है। आखिर सुषमा और मधुसूदन का बडी धुमदाम से प्रेम विवाह होता है। राकेश जी ने सुषमा के माध्यम से आधुनिक नारी का द्वन्द्व ,जिसमें वह एक साथ सब कुछ भी चाहती है, और यह कठिन है। अन्त में उसका सहारा है प्यार का घर। सुषमा बोध्दिक है वह मधुसूदन से स्वीकार करती है।

`न आनेवाला कल` उपन्यास में भी प्रेम समस्या दिखाई देती है। इसका नायक है मनोज सक्सेना और नायिका है उसकी दूसरी पत्नी शोभा। मनोज सक्सेना की पत्नी आधुनिक नारी है। शोभा का मनोज से पूनर्विवाह हुआ है। शोभा अपने पहले पति के साथ वैवाहिक जीवन के सात वर्ष बिता चुकी थी। उसकी मृत्यु के बाद शोभा के जीवन में मनोज सक्सेना आया। शोभा और मनोज सक्सेना का यह एक अनमेल प्रेम विवाह है। इस उपन्यास में `बौनी` नामक एक पात्र है। बौनी पहाडी स्कूल में टीचर है। वह अविवाहित युवती है। उसका गोरा - दुबला शरीर है। जवानी के अनुरुप हल्का-फुल्का जीना उसे पसंद है। भ्रमर के समान जहाँ अच्छा लगे वहाँ से मधु चुसकर फिर आगे बढना यही उसका जीने का ढंग है।

बौनी और मनोज सक्सेना का संबंध नामहीन संबंध है। वे एक - दूसरे से जुडते हैं, एक दूसरे के प्रति आपस में प्रेम होता है। बौनी मुक्त स्त्री है,समाज के एवं नैतिकता के बंधन उसके लिए नहीं है। बौनी के किसी के साथ खासकर पुरुषों के साथ पेश आने के तौर तरीके ही इतने सस्ते है कि कोई भी सहजतासे अपने मन में उसके बारे में ऐसी वैसी इमेज बना सके। बौनी दूसरों को साधन बनाकर अपने मन को बहला लेती है। उसके विचार से स्कूल के अधिकांश जोडे इसी तरह के हैं। चेरी-लारा के प्रेम विवाह के बीच में मिसेज दारुवाला है। माली ब्राऊन,मिसेज ज्याफ्रे की बनायी हुई बेटी है,अपनी बेटी नही। इसकी तुलना में बौनी अपने खुलेपन का औचित्य ठहराना चाहती है।

जब शोभा अपने मायके चली जाती है तो मनोज बौनी कीओर

आकर्षित होता है। यह संबंध अस्थायी है। वह एक आधुनिक नारी का जीवन जीना चाहती है। बीनी मनोज के साथ एक शाम गुजारती है। जब कि मनोज शोमा से उत्पन्न खालीपन को भरने के लिए बीनी से सम्बन्ध बनाता है। बीनी भी मनोज की तरह अकेलेपन से ग्रस्त है, पर एक अन्तर है। बीनी स्थायी रिश्तों से घबड़ाती है।

वह खुद की सोचती है, वह खुदगरज है, इसलिए हर एक के साथ आखिर उसकी अनबन हो जाती है। बीनी किसी के साथ भावनात्मक उलझनोंमें नहीं पड़ना चाहती। लेकिन एक दिन बीनी भावना विवश होकर मनोज को होटल सेवाय में बुलाती है, और मनोज को होटल सेवाय में पहुँचने के लिए थोड़ी देर लगती है। बीनी खुली जगह चाहती है और होटल से बाहर घूमने के लिए मनोज और बीनी निकल पड़ते हैं। चाँदनी रात का समय है। बीनी एक आधुनिक नारी है, स्वच्छन्द और बेफिक्र भी है। वह आजाद जीवन जीना पसन्द करती है। बीनी मनोज को डाँटती भी है। वह मनोज से कहती है कुछ बात करो। तुम इस तरह गुमसुम क्यों चल रहे हो ? रात में सड़क पर टहलते हुए बीनी और मनोज की लम्बी बातचीत के टुकड़े हैं जो उसके व्यक्तित्व को खोलते हैं। बीनी रात के सन्नाटे में मनोज के घर जाने को तैयार है, पर ऐसा हो नहीं पाता। बीनी मनोज की यह मिलन संध्या काफी विस्तार से वर्णित है और यहाँ राकेश ने बीनी के आधुनिक स्वच्छन्द व्यक्तित्व के जरिए प्रेम की समस्या को प्रकट करने का प्रयास किया है। मनोज और बीनी रास्ते से चलते समय सामने से तीन चार लड़कियाँ उसे देखते हुए गुजरती है और बीनी कहती है ---

> ' कितना फर्क होता है, आदमी की एक जगह की जिन्दगी और दूसरी जगह की जिन्दगी में। यह लड़कियाँ जैसी सड़कपर हैं उसी तरह अपने घर में नहीं रहेंगी।' [१]

इस तरह बीनी के स्वभाव में एक खुलापन है जो कि राकेश की आधुनिक नारियों में होता है।

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१२४।

बानी और मनोज के अलावा इस उपन्यास में दूसरा और एक प्रसंग छिड़ा हुआ है। वह है मनोज सक्सेना का पड़ोसी कोहली तथा उसकी पत्नी के विषय में कोहली अपनी पत्नी शारदा को बहुत सताता था। यहाँ सच्चे प्रेम के अभाव के कारण कोहली तथा उसकी पत्नी का जीवन दु:खपूर्ण बना हुआ दिखाई देता है। यहाँ प्रेम इस अर्थ में समस्या है कि वह असलील न होकर उपरी तौर पर रह गया है। सच्चे प्रेम का अभाव ही दाम्पत्य जीवन को निरस बनाता है।

इसी उपन्यास में स्कूल से जुड़ी हुई एक और नारी है - चपरासी फकीरे की बीवी काशनी। मनोज काशनी के विषय में सोचता है कि उसकी आँखों की चमक में वैसा ही कुछ है जैसा नंगे आकाश में या घाटी के अँधेरे में होता है। काशनी उपन्यास के अन्त में फिर मनोज के घर लौट आती है। मनोज और काशनी का यह प्रसंग फिसलन भरा है। जिसे नैतिक दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता। शोमा अपने मायके चली गई है और मनोज कहीं लड़खड़ा सकता है। मनोज सक्सेना ने काशनी को घर का सामान ले जाने के लिए बुलाया है। क्योंकि उसे अब यह स्थान छोड़ देना है। मनोज का दिल कह रहा था कि वह किसी भी क्षण मेरी ओर बढ़ आने की प्रतीक्षा में है। इसे मनोज की दुर्बलता ही कहना होगा, क्योंकि वह कई बार फिसलता है। इस समय,काशनी तो इस तरह सट आयी जैसे कि वह रुई और कपड़े की बनी पुतली हो या जैसे कि भ्रमर और फूल का बना हुआ संबंध हो। जब मनोज काशनी की ओर बढ़ता है तो काशनी मनोज से कहती है कि मेरा ऑपरेशन हुआ है। यह भी एक अनोखा प्रेम प्रसंग है,यहाँ मनोज का काशनी के प्रति जो प्रेम है वह आत्मिक नहीं है बल्कि ऐंद्रिक है। यहाँ उसका प्रेम शारीरिक आकर्षण के कारण ही है। लेखक ने ऐसे प्रसंग अपने उपन्यासों में जहाँ - जहाँ दिखलाए हैं वहाँ वहाँ आज के युवा पीढ़ी के उपरी प्रेम को ही प्रातिनिधिक रुप में प्रकट किया है। ऐसे प्रेम में कोई समर्पण दिखाई नहीं देता। वर्तमान काल में ऐसे ही प्रेमियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

'अंतराल' उपन्यास का नायक कुमार है। जब वह पहली बार श्यामा के सम्पर्क में आता है तब वह उसे प्रोफेसर कुमार अध्यक्ष, दर्शन विभाग के रुप में मिलता है। श्यामा एम.ए.करना चाहती है। अत: प्रो.मल्होत्रा के कहने पर वह उसे व्यक्तिगत रुप से पढाता है। कुमार वैयक्तिक धरातल पर अपने आपको निरसंग पाता है। श्यामा का सम्पर्क अधिक बढता रहता है। दोनों एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। कुमार और श्यामा एक दिन पढाई स्थगित रखकर, बरसाती खुशनुमा संध्या में घूमने निकलते हैं। श्यामा का सहज स्पर्श पाते ही कुमार ऊष्मा का अनुभव करता है। वर्षा की फुहार में खेतों से गुजरते हुए और बिजली कौंधने पर वह श्यामा का साथ एवं निकटता पाते ही उसे बाँहों में समेट लेता है। लेकिन दोहरी मानसिकता से वह मुक्त नहीं हो पाता।

कुमार के जीवन में श्यामा से पूर्व लता आ चुकी है। लता को केन्द्र में रखकर उसने भावी जीवन का ताना बाना बुना था। उसके चुम्बकीय व्यक्तित्व का आकर्षण अब भी उसकी संवेदना में सुरक्षित है। वह श्यामा से कहता भी है -- 'शारीरिक आकर्षण से हटकर एक और आकर्षण होता है, व्यक्तित्व का चुंबक आकर्षण, जो शारीरिक आकर्षण से कहीं अधिक मन को खींचता है। उस आकर्षण का अनुभव मुझे पहली बार उसी को लेकर हुआ था।'[१]

कुमार श्यामा को विदा देने अगले स्टेशन दो घण्टे पूर्व पहुँच जाता है वहाँ भी रेल आधा घंटा लेट पहुँचती है। दूसरे स्टेशन पर कुमार श्यामा का इंतजार करता है। दूसरी बार श्यामा से मिलने से पहले कुमार ने घर बसाने का प्रयास किया, पर आत्मिय सम्बन्धों के अभाव में मात्र शारीरिक संबंधों को ढोना पडा। दुबारा जब कुमार श्यामा से मिला था तब वह स्वयं को बम्बई के जीवन क्रम की दैनिकता में बाँध चुका था। एक दिन श्यामा और कुमार का मिलन होता रहता है। श्यामा रात को कुमार के घर से लौटना चाहती है, पर वह उसे बाहुपाश में लेता है जिसे श्यामा स्वीकार नहीं करती --

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.५१।

'आदि से अन्त तक अंतराल की कथा से गुजरकर श्यामा और कुमार के रिश्तों को किस तरह परिभाषित किया जाय।'[१]

यहाँ भी लेखक ने श्यामा और कुमार के प्रेम को समस्या से ग्रस्त पाया है। दोनों के बीच के प्रेम में एक 'अंतराल' बना रहा है। उनके प्रेम का सपना परिण्य में बदलकर साकार नहीं हुआ।

'अंतराल' उपन्यास का केंद्रिय पात्र कुमार, लता के व्यक्तित्व के चुम्बकीय आकर्षण से घिरा था। परन्तु वह अपने अन्तराल की परिधि को स्वीकार कर मात्र आत्मीयता की तड़पन को लिए जीवन जीने को विवश बना है।

मोहन राकेश ने और भी एक प्रेम कहानी का विवरण दिया है। वह है कृशनचंन्दन की रुमानी कहानी। पूनम के चाँद की रात और गाडी का सफर था। उसमें बैठे एक बूढे जाट के चेहरे पर गहरे घावों के निशान होते है।

'प्रीतो उस जाट की पत्नी का नाम था, एक मात्र स्त्री जिससे उसने जीवन में प्रेम किया था।'[२]

ब्याह के बाद प्रीतो चार दिन के लिए अपने मायके चली गई, तो वह भी उसके पीछे वहाँ जा पहुँचा। चाँदनी रात का समय है जाट ने देखा कि प्रीतो उसके पास से उठकर कहीं बाहर जा रही है। वह भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल दिया। कितने ही हरे - भरे खेत लाँघकर एक पहाडी की ओर में प्रीतो जहाँ पहुँची वहाँ एक कुँआ था। कुएँ के पास बेर का एक पेड था। पीछे एक कच्चा घर था जिसका दरवाजा आधा खुला था। जाटने देखा प्रीतो अन्दर एक आदमी से प्रेम कर रही है। उस आदमी के कहने से वह अँधेरी कोठरी से पानी लाने अन्दर गई, तो जाट ने कृपाण निकालकर उस आदमी का सिर काट दिया और चुपचाप वापस चला आया। रास्ते में उसने कृपाण से लहू पोंछ दिया। प्रीतो कुछ देर बाद घर पहुँची। उसे सोया जानकर प्रीतो ने तसल्ली करके कि उसके प्रेमी का हत्यारा उसका पति नहीं है, जिन्दगी चलती रही। उनके कई बच्चे-अच्छे हो गए। बरसों बाद एक दिन

---

१ डॉ.मीना पिंपळापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.१५१।

२ मोहन राकेश - अंतराल - पृ. ७२।

खाना खाते हुए जाट ने प्रीतो से अन्दर अँधेरी कोठरी से आचार ला देने को कहा । प्रीतो यह कहकर बैठी रही कि उसे अँधेरे में अन्दर जाने से डर लगता है । तब जाट से नहीं रहा गया । उसने कह दिया कि अपने यार के कहने से वह अँधेरी कोठरी से पानी लाने गई थी,तब क्या उसे डर नहीं लगा था ? यह जानते ही उसके प्रेमी की हत्या उसके पति के हाथों हुई है यह प्रीतो ने तुरन्त जान लिया और उसने जाकर कृपाण निकाल ली और अपने पति के शरीर को छलनी करने लगी । पति ने किसी तरह अपने को बचाया और पत्नी को ही समाप्त कर दिया ।

इस कथा के माध्यम से मोहन राकेश इस संकेत को गहरे स्तर पर व्यंजित करना चाहते हैं कि प्रिय और पत्नी एक साथ हो पाना कितना कठिन है । पति के होते हुए यहाँ की नारियाँ पर पुरुष से प्रेम करती हैं,तो हमारे समाज में उसकी हालत प्रीतो जैसी होती है ।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि समाज के बुनियादी मूल्य जो प्रेम, आस्था तथा समझौते पर टिके हैं उन्हें राकेश अंत में पर्याप्त रुप में स्वीकार कर लेते हैं ।

<u>महानगर की समस्याएँ</u> --

मोहन राकेश ने `अँधेरे बंद कमरे` उपन्यास में पत्रकार मधुसूदन,हरबंस, नीलिमा आदि के माध्यम से दिल्ली के आधुनिकतम वातावरण में मानव संबंधों की खोज का प्रयास किया है । आर्थिक अभाव के संकट में आज कल जीवन अधिक जटिल होता जा रहा है । मधुसूदन जैसे बुध्दिजीवी व्यक्ति को भी एक गन्दी गली में रहने को विवश होना पड़ता है । दिल्ली शहर में --

> `सुबह-सुबह हजारों साइकिलें शहर की विभिन्न बस्तियों से निकलती हैं और शाम को थकी हारी उन्हीं बस्तियों को लौट जाती हैं । सन दो के ओल्डस्मोबाइल से लेकर सन साठ की डौज किसबे तक सैकड़ों तरह की गाड़ियाँ यहाँ से वहाँ भटकती है -- हार्डिंग रोड, सुन्दरनगर चाणाक्य पुरी,जनपद,राजपथ,कँनॉट प्लेस` कनॉट सर्कस`[१]

१ डॉ.रमेशकुमार जाधव - मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व-पृ.३२ ।

दिल्ली जैसे महानगर में समस्याओं से ग्रस्त आदमी किसी तरह जिंदगी जीता है इसका अनुमान लगाना भी मधुसूदन को असंभव लगता है। इस महानगर के बारे में उसका यह कथन महानगरीय जिंदगी को इस तरह परिभाषित करता है —

'मैं जब भी इस खिड़की के पास आकर खड़ा होता हूँ, तो मुझे न जाने कैसा लगने लगता है। मुझे लगता है जैसे मैं एक नदी के बहाव को ऊपर से देख रहा हूँ, मगर इसकी तह में एक और ही दुनिया है जिसका यहाँ से देखने पर कुछ अनुमान नहीं होता। ये बसें, ये कारें ये भाग-भागकर सड़कें पार करते हुए लोग, इन्हें देखकर क्या यह अंदाजा भी होता है कि इस हलचल की तह में इनमें से हर एक आदमी कहाँ और किस तरह की जिन्दगी जीता है। इनमें कई लोग हैं जिनके चेहरे और लिबास देखकर मन में एक ईर्ष्या जाग आती है, मगर हो सकता है अपने व्यक्तिगत जीवन में वे ऐसे सीलन और बदबूदार वातावरण में रहते हों जहाँ जाकर इन्सान के लिए साँस लेना भी कठिन हो जाता है। मैं जब भी इस भीड़ पर नजर डालता हूँ तो इस तरह की बात सोचकर कई बार मेरा मन उदास होने लगता है।'[१]

शहर की गंदगी का लोगों को बहुत बड़ा खतरा है। मगर इस तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता कि स्वास्थ्य से कहीं बड़ा खतरा किसी और चीज को है। मैं समझता हूँ कि हमारी जिन्दगी में जो गंदगी के कोने है, हम उनमें एक नजर डालकर देख सके और उनकी ठीक-ठीक तसवीर लोगों के सामने पेश कर सकें।

बड़े-बड़े शहरों में घरों के बीच में जगह नहीं मिलती और जो पूरे-पूरे फ्लैट का किराया अदा नहीं कर सकते इन बरसातियों में गरमियों में लू और सरदियों में सर्द हवा इस तरह बेखटके चली आती है। अर्थ प्रधान युग के कारण सांस्कृतिक संस्थायें- कलाकार तथा पत्रकार निजी स्वार्थों के लिए जीवन की दिशा बदल रहे हैं। पॉलिटिक्ल सेक्रेटरी हरबंस को भी अपने दाँव पेंच में तिगुना

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.२६८।

वेतन देकर लेना चाहता है।

महानगर में बेकारी की समस्या अधिकतम दिखाई देती है। ठकुराइन को न चाहते हुए भी आर्थिक संकट के कारण अपनी जवान बेटी को लोगों के घर काम करने के लिए भेजना पड़ता है। इबादत अली की इकलौती बेटी धन के अभाव के कारण निकाह नहीं कर पाती। वह घर छोड़कर चली जाती। सुषमा आर्थिक विवशता से मुक्त नहीं है। आर्थिक संकट के सामने व्यक्ति नैतिक मूल्यों की परवाह किये बिना निकृष्टतम कार्य करने के लिए तैयार है। महानगरीय जीवन अर्थ के अभाव में और भी घटनपूर्ण बनता जा रहा है।

' न आनेवाला कल ' मोहन राकेश का दूसरा उपन्यास है। राकेश जी ने बम्बई जैसे बड़े शहर में स्थित विभिन्न समस्याओंका इस उपन्यास में जगह जगह चित्रण किया है। बम्बई आज एक ऐसा महानगर है, जो दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है। बम्बई राजनीतिक,सांस्कृतिक,शैक्षिक तथा औद्योगिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण दुनिया के कोने-कोने से लोग यहाँ आते हैं। किन्तु आबादी के बढ़ जाने के कारण अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। मकान की समस्या उनमें से एक महत्वपूर्ण समस्या है। महानगरीय जीवनमें मकान की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है,जिनमें नारी समस्या,यौन - भावना, नौकरी - पेशा स्त्री की समस्या,प्रेम विवाह,जैसी समस्याएँ प्रधान रूप में उभर आयी है।

' न आनेवाला कल ' उपन्यास का नायक है मनोज सक्सेना जो कि मिशनरी स्कूल का एक कुशल अध्यापक है। उपन्यास में हेडमास्टर से चपरासी तक सब के सब एक तरह की जिंदगी जीते हैं। इसका कारण है स्कूल की राजनीति। मिशन स्कूल का सब कुछ छोड़कर जल्द से जल्द मनोज को दूर - दूर जाना है। इसलिए एक दिन मनोज नौकरी से त्यागपत्र देता है। उपन्यास का दूसरा पात्र है कोहली। उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई है। पत्नी की मौत के बाद उसको मिला फैमिली क्वार्टर संस्था द्वारा लौटा लेने का डर कोहली के मन में होता है और इसी संदर्भ में वह कहता है —

... KHANDEKAR LIBRARY ... KOLHAPUR

'इससे यह मतलब न लिया जाए कि मुझे इसके बाद फेमिली क्वार्टर की जरुरत नहीं रहेगी। मैं इन्हीं दिनों दूसरी शादी कर रहा हूँ और अपनी नई पत्नी को साथ लेकर ही वहाँ आऊंगा। यह बात लिख देना मैंने इसलिए आवश्यक समझा है कि कहीं मुझे अकेला मानकर मेरे वाला क्वार्टर किसी और को दे दिया गया, तो मेरे यहाँ आने पर नये सिरे से व्यवस्था करने की झंझट पैदा न हो, मेरी स्थिति को ध्यान मे रखते हुए आप मिसेज क्राऊन से विशेष अनुरोध कर देंगे।' १

इस तरह शहरों में मकान की समस्या बढती हुई दिखाई देती है।

'अंतराल' राकेश जी का तीसरा उपन्यास है। इसमें भी महानगर की समस्या दिखाई देती है। 'अंतराल' उपन्यास दो कस्बाती शहरों और बम्बई महानगर के परिवेश पर टिका हुआ है। इसका नायक कुमार है जो कि प्रोफेसर के रुप में सामने आता है।

इस उपन्यास की नायिका श्यामा, बीजी की समझदारी में बंबई में फ्लेट खरीदना चाहती है। श्यामा चाहती है कि अपना खुद का मकान हो, जगह कि समस्या को हल करने के लिए उसे फ्लेट लेना पड़ता है परंतु पैसे आदा करते समय उनको बडी मुश्किल का सामना करना पड़ता है।

श्यामा कि ननद है सीमा जो कि बम्बई में टेलिफोन ऑपरेटर की नौकरी करती है। वह शहरी जिंदगी में घुल मिल गई है। नयी पीढी का प्रतीक तथा आधुनिक स्वतंत्र्य स्त्री का दर्शन उपन्यास में सीमा द्वारा होता है।

सीमा स्वतंत्र्य यौन सम्बन्धों में विश्वास करती है। किसी से दोस्ती रखना और विवाह करना इसका फैसला वह स्वयंम करती है। वह जात पात, धर्म, झूठा आदर आदि बातों में वह विश्वास नहीं रखती। सीमा के विचार चुनौती देनेवाले हैं। प्रेम और विवाह कि क्षेत्र में स्वतंत्र्य चेतना का विकास

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.४८।

सीमा के द्वारा प्रकट होता है। महानगरीय जीवन में मकान समस्या अनेक समस्याको जन्म देती है। नारी समस्या - इसका जीता जागता उदाहरण है - सीमा। सीमा नौकरीपेशा नारी है, वह प्रेम विवाह करती हैं। इस तरह महानगर में नारी जीवन से संबंधित बढती हुई समस्याएँ दिखाई देती हैं।

<u>अर्थ - समस्या</u> --

मोहन राकेश ने अपने उपन्यासों में अर्थ की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। ` अंतराल ` में उन्होंने इस समस्या को प्रकट किया है। सीमा कथानायिका श्यामा के पति देव की छोटी बहन है। सीमा आधुनिक नारी का प्रतीक है। आधुनिक युग में मानव समाज से कट गया है। व्यक्ति और परिवार का सम्बन्ध कट गया है। समाज की यह समस्या बहुत जटिल है। समाज में व्यक्तित्ववाद का बोलबाला है। --

` अग्रज और अनुजों में आपस का प्यार केवल पैसों पर ही टिका है। `[१] आज के सम्बन्ध केवल आर्थिक आधार पर बनें है। ` अमीर के सब साले वाली ` उक्ति सारे समाज में प्रचलित है। वर्तमान काल में माँ-बेटे का सम्बन्ध, भाई बहन का सम्बन्ध पैसों पर ही टिका है।

` अंतराल ` में श्यामा और देव के परिवार का सम्बन्ध केवल पैसों पर ही टिका है। देव की मृत्यू के पश्चात देव की इच्छानुसार श्यामा, सीमा (ननद) और बीजी का उत्तरदायित्व लेती है। उनका सम्बन्ध केवल पैसों का ही संबंध है। बीजी जो हमेशा श्यामा की घृणा करती है लेकिन --

> ` फ्लेट और उसकी नौकरी, ये दो बातें थीं जिन्हें लेकर बीजी उसके सामने छोटी पड जाती थी। `[२]

सीमा नौकरी करती है, और स्वाभिमान से जीना चाहती है। वह दिखावे की जिंदगी जिना नहीं चाहती। वह श्यामा से अलग रहना चाहती है। श्यामा कहती है कि हमें अब पैसा इसलिए चाहिए कि थोडे दिनों में सीमा के

---

१ विमला कुमारी पण्डिता - उपन्यासकार मोहन राकेश - पृ.६९।

२ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.१४१।

ब्याह के लिए पैसे की जरुरत पड़ेगी। बीजी ने लिखा था कि पूना का घर बेचकर उन्हें पच्चीस हजार तक मिल सकते हैं। इतने में बम्बई में एक छोटा सा फ्लेट खरीदा जा सकता है। पूना के बाद बम्बई को छोड़कर और किसी शहर में जाने के लिए सीमा तैयार नहीं रहती थी। उसे जितनी अच्छी नौकरी बम्बई में मिल सकती है, और कहीं नहीं मिल सकती। लेकिन जब पूना का मकान बेचा गया तो उसके कुल अठारह हजार वसूल हुए। बम्बई में जिस फ्लेट की बात हुई, वह पैंतीस हजार से कम नहीं था। वह उन दिनों अपने वातावरण में इस तरह ऊबी हुई थी कि जल्दी से जल्दी बाकी रकम का प्रबन्ध कर देना उसे जरुरी था।

उसके पास बेन्क में जितने रुपये थे, वे सब उसने निकलवा लिए। प्राविडेंट फंड से जितना कर्ज लिया जा सकता था, वह भी उसने ले लिया फिर भी उसको प्रोफेसर मल्होत्रा से दो हजार का कर्ज लेना पड़ा। किसी तरह रकम पूरी करके भेज दी, तो बम्बई में जाकर रहने का विचार मन पर भारी पड़ने लगा। क्या उसके पैसे का प्रबन्ध करने के मूल में एक और कारण नहीं था ? प्रोफेसर मल्होत्रा ने बहुत पहले एक पत्र में लिखा था कि कुमार आजकल बम्बई में हैं और वहाँ एक पब्लिसिटी कंसर्न में काम करता है। यही वजह थी शायद कि फ्लेट खरीदे जाने के साथ ही बम्बई में रहने की बात को लेकर मन में एक विरोध महसूस हो रहा था।

श्यामा के पैसे से एक सिहरन उठी जो उसके शरीर में सूइयों की तरह फैल गई। बोलते हुए उसे लगा कि जो होंठ हिल रहे हैं, वे उसके नहीं हैं --

> "पैसा तो पता नहीं कितना - कितना, किस - किस चीजपर बरबाद होता रहता है। आदमी इसीका हिसाब करने लगे।" [१]

श्यामा को कितनी परेशानी उठानी पड़ती है, ताकि वह सीमा और बीजी को पैसे भेज सके। अपना रिश्ता पैसों तक ही सीमित न रखे यही कारण है कि वह बीजी की समझदारी में फ्लेट बम्बई में खरीदती है। उस समझदारी में वह

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.१६२।

अपनी तमाम पूँजी लुटा देती है लेकिन दुर्भाग्यवश बीजी और सीमा उसका रिश्ता पैसों से बढकर नहीं मानती। फलस्वरुप श्यामा बाद में मण्डी लौट आने की बात सोचती है।

धन आज के समाज की धुरी बन गया है। इस धुरी का आकर्षण इतना प्रभावशाली है कि कोई भी इससे मुक्त नहीं रह पाता। मानव के सभी संबंध इसी धुरी के आधार पर बने हुए हैं यहाँ तक कि प्रेम पैसा पवित्र भाव भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रह पाता है। 'अंतराल' भी इसका अपवाद नहीं है। इसमें भी इसका प्रभाव दिखाई देता है। श्यामा एम.ए.पढने के विचार से कस्सावपुर शहर में आती है। वह कुमार से दर्शनशास्त्र पढती है।

कुमार और श्यामा का पारस्पारिक आकर्षण बढता है। वह कुमार से प्यार करती है। लेकिन उसके पीछे सदा फीस के बारे में पडी रहती है। कुमार बडी सफाई से इस प्रश्न को टालता रहता है।

'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास के हरबंस कि आय इसलिए अधिक नहीं थी कि वह पार्ट टाईम नौकरी करता था। अर्थ कि समस्या उसके परिवार में दिखाई देती है इसलिए वह नौकरी में फुलटाईम बनने कि सोचता है।

परिवार कि आय अगर कम हो और व्यय कि मात्रा जादा हो तो जीना बडा मुश्किल हो जाता है। मोहन राकेश ने अँधेरे बंद कमरे में हरबंस और नीलिमा के जरीये स्पष्ट किया है — हरबंस कि आय जादा न थी। इसलिए कला साधना में रत अपनी पत्नी से वह कहती है —

> 'तुम्हे इन छोटी-छोटी बातों से क्या मतलब है कि घर में खर्च के लिए पैसा कहाँ से आता है और फिस किस तरह खर्च हो जाता है।'[१]

दाम्पत्य जीवन में धन का अभाव हो और पति पत्नी अपनी अपनी जिंदगी अलग रुप से जीना चाहते हो तो वह दाम्पत्य जीवन टुटने में देर नहीं लगती। नीलिमा अपने पति से स्पष्ट रुप से कहती है — तुम्हें मेरी और मेरे लडके की जवह से

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.३४७।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

इतनी तकलीफ उठानी पड़ती है,तो एक बार साफ क्यों नहीं कह देते कि मैं उसे लेकर कही अलग जा रहूँ ? मै जैसे भी होगा अपना और उसका गुजारा कर लूँगी । तुम फिर चाहे चार कमरे के घर मैं रहना या सड़क पर लड़की का खोखा लगाकर रहना हम तुम्हे रोकने नहीं आयेंगे और न ही कभी तुमसे कुछ माँगने आयेंगे ।

आज के समाज में मुख्य साध्य अर्थ की प्राप्ति है,चाहे साधन कितने भी निम्न क्यों न अपनाने पड़े । यही कारण है कि नैतिकता धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है । यही कारण है कि धन पर टिके सम्बन्ध केवल सहने के सम्बन्ध बन जाते हैं, जिन्हें विवशता के साथ झेलना पड़ता है । क्योंकि सम्बन्ध अक्सर भावना से जुड़े होते हैं,और भावना की आर्थिक सम्बन्धों से टकराहट होती है ।

मोहन राकेश ने अति सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा इस समस्या को वर्णित किया है कि किस प्रकार इस के सम्बन्धों से पारिवारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है ।

विवाह - समस्या --

स्वतंत्रता के पश्चात ऐसे अनेक नियम बनाये गये है जिनसे नारी को वैवाहिक जीवन में भी आश्रय मिला है । बाल विवाह पर कानूनी तौर पर बंधन लगाया गया है । विधवाओं के पूनर्विवाह को भी मान्यता मिली है । द्विभार्या प्रतिबंध कानून पास किया गया । सन १९६१ में दहेज प्रथा पर प्रतिबंध लगाया गया । नारी के तलाक को अधिकार प्राप्त हुआ । कई नारियाँ स्वेच्छा से करारात्मक विवाह भी कर सकती है, अत: स्पष्ट है कि कानून सभ्यता तथा शिक्षा ने नारी को स्वतंत्र किया । फिर भी नारी की सभी समस्याएँ सुलझ नही पायी । कुछ समस्याओंने तो आज विकराल रुप धारण किया है । नारी केवल उपभोग और उपभोग की वस्तु नहीं है और न ही वह मनोरंजन का विषय है । वह पुरुष की सहभागिनी एवं यथार्थ अर्ध्दांगिनी है ।

विवाह से स्त्री को जो आधार मिलता है, वह आर्थिक है,शारीरिक है,मानसिक अथवा आत्मिक नहीं है,मानसिक और आत्मिक सम्बन्धों में तो स्त्री

को केवल समझौता करना पड़ता है। हमारे भारतीय समाज में विवाह के दो रुप प्रचलित है परम्परागत अर्थात माता-पिता द्वारा तय किया गया विवाह एवं प्रेम विवाह। दोनों ही में कुछ गुण दोष होते हैं। समाज में प्रेम विवाह को यह स्थान प्राप्त नहीं है जो परम्परागत विवाह को प्राप्त है। विवाह सूत्र में बंधना आसान है, किन्तु उसे निभाना एवं सफल वैवाहिक जीवन व्यतीत करना उतना ही कठिन है। स्त्री-पुरुष दोनों को सफल वैवाहिक जीवन हेतु परिस्थिति विशेष में अपनी - अपनी इच्छाओं का दमन करना ही पड़ता है।

मोहन राकेश के 'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास में हरबंस नायक है और नायिका है उसकी पत्नी नीलिमा। इन दोनों की रुचियाँ भिन्न हैं। नीलिमा नृत्य करना चाहती है, हरबंस अध्यापक है। शोध में उसकी रुचि है। दोनों पति-पत्नी के संबंध तनाव भरे हैं।

हरबंस दिल्ली में एक कालेज में इतिहास का प्राध्यापक है। वह नीलिमा से प्रेम विवाह करता है - पर विवाह के कुछ दिनों के बाद ही उसका प्रेम समाप्त होता है और प्रेम के बदले कटुता आ जाती है। हरबंस और नीलिमा के विचारों में मत भिन्नता दिखाई देती है। हरबंस अपनी नौकरी छोड़कर लन्दन चला गया, जहाँ वह अपनी डाक्टरेट की थिसिस पूर्ण करना चाहता था। वह हर पत्र में अपने अकेलेपन की शिकायत कर नीलिमा से लन्दन आने को कहता है।

नीलिमा पेरिस में जब एक रात अधिक रुक जाती है तो हरबंस का मन शंका से भर उठता है। नीलिमा सारे प्रयत्न कर पोलिटिकल सेक्रेटरी से मिलकर अपने नृत्य का एक भव्य शो दिल्ली में रखवाती है। हरबंस न तो टिकट बेचता है, न किसी प्रकार की सहायता करता है। नृत्य प्रदर्शन होता है। नीलिमा हरबंस को छोड़कर चली जाती है। वह दिन-रात शराब पीकर पड़ा रहता है। नीलिमा को यह समाचार मिलता है तो वह पुन: वापस लौट आती है। राकेशजी ने पति-पत्नी के संबंधों को गहरी नजर से देखा भी है, परखा भी है।

इसके बाद और एक दो प्रेमी है जो कि विवाह के बंधन में बंधना चाहते हैं। उनका नाम है भार्गव और शुक्ला। नीलिमा भार्गव से कहती है कि तुम शुक्ला से विवाह करना चाहते हो इसका साफ-साफ तुम जबाब क्यों नहीं देते ? शुक्ला नीलिमा की बहन है। भार्गव को नीलिमा डाँटती है। आप साफ साफ उससे ठीक से बात किया करें। भार्गव बेचारा इतना सैंसिटिव है कि उसका एब्स्ट्रेक्ट आज कल इस लड़की की चिन्ता में ही घुला जा रहा है। उन दिनों हरबंस भार्गव से अच्छी तरह बोला करता था, मगर जब से हरबंस उससे चिढने लगा है तब से शुक्ला का रुख भी बदल गया है। हरबंस कहता है कि मैं जो कहूँगा उसके साथ ही शुक्ला विवाह करेगी --

> 'अगर वह इससे कह दे कि तुझे जिंदगी भर क्वारी रहना चाहिये तो वह क्वारी ही बैठी रहेगी।'[१]

परिचितों में भी बहुत शीघ्र ही इस बात की चर्चा होने लगी कि भार्गव के साथ शुक्ला के ब्याह को बात टूट रही है। शिवमोहन भी उन दिनों काफी परेशान था।

सुरजीत एक पत्रकार है जो हरबंस के परिवारवालों का परिचित है। पर उससे हरबंस सख्त नफरत करता है। वह पहले भी दो विवाह कर चुका है तथा अपनी दोनों पत्नीयों से तलाक ले चुका है। हरबंस के लंदन जाने के कुछ दिनों बाद नीलिमा भी शुक्ला आदि को सुरजीत के भरोसे छोड़कर चली जाती है। सुरजीत भोली - भाली शुक्ला को अपनी बातों में बहलाकर उससे विवाह कर लेता है। इन सारी हरकतों के लिए नीलिमा ही जिम्मेदार है ऐसा हरबंस समझता है।

राकेश जी ने हर एक पात्र के माध्यम से विवाह की समस्या को स्पष्ट रुप से पाठक के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.७५।

सुषमा श्रीवास्तव एक पत्रकार लड़की है जो एक आधुनिक नारी है। सुषमा कुँआरेपन की जिंदगी से तंग आकर अपना घर बसाना चाहती है। मधुसूदन की तरह ही एक पत्रकार की हैसियत से वह बाहर की दुनिया देख चुकी है। मधुसूदन को वह बहुत समय तक अपने में बाँधे रहती है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक है। उसके पास सशक्त तर्क शक्ति है। मधुसूदन अचानक एक दिन सुषमा की ओर आकर्षित होता है। मधुसूदन को विश्वास था कि सुषमा घर तोडना नहीं चाहती, वह जोडना चाहती है।

सुषमा मधुसूदन से प्रेम करती है। सुषमा मधुसूदन के साथ विवाह करती है तथा यह चाहती है कि वह भी उसके साथ विदेश आकर रहे,जहाँ वह जाना चाहती है। पर दूसरे ही दिन मधुसूदन सुषमा को देखता है तो उसके चेहरे पर क्रोध भाव नजर आते है। सुषमा अपने ही को छलती रहती है। स्वयं को धोखा देती हुई एक आधुनिक लड़की है जो सुख के पीछे दौड़ती है पर उसे कभी सुख नहीं मिलता है। मधुसूदन का मन द्विधा आवस्था में है। आधुनिक नारी के रुप में उसके व्यक्तित्व का निरुपण सुन्दर ढंग से राकेशजीने किया हुआ मिलता है।

` न आनेवाला कल ` मोहन राकेश का ऐसा उपन्यास है जिसमें उन्होंने अपने निजी अनुभवों का उपयोग पर्याप्त मात्रा में किया है। इस उपन्यास का कथानायक मनोज सक्सेना है और नायिका है शोभा। इसमें भी विवाह समस्या दिखाई देती है। मनोज अकेलेपन से ग्रस्त है। उसे एक क्वार्टर मिला था जिसमें वह अपनी पत्नी शोभा के साथ रहा करता था। वह दोपहर में स्कूल में ही भोजन करता था। शाम को भेजे गये टिपिन का भोजन अकेले ही अरुचि के साथ खा लेता था।

शोभा मनोज सक्सेना की पत्नी है। शोभा ने अपने पहले पति की मृत्यु के उपरांत मनोज से पुर्नविवाह किया है। शोभा अपना वैवाहिक जीवन सात सालतक जीकर पति की मृत्यू के बाद मनोज को स्वीकारती है। --

' मनोज से विवाह करने में उसने जितनी तत्परता दिखायी उतनी ही तत्परता से वह मनोज से ऊब भी गयी । इसका एक ही कारण था उसका स्वातंत्र्य बोध । अपने स्वतंत्र विचारों के कारण शोभा मनोज को पूरे मन से न तो स्वीकार ही कर सकी और न उसमें एक पति की तसवीर ही देख पायी ।' [१]

दोनों अपने अकेलेपन को भरने के लिए शादी करते हैं, फिर भी सच्चे अर्थ में पति-पत्नी नहीं बन पाते । दोनों के बीच शोभा का पहला पति हरदम उपस्थित न रहकर भी स्थित रहता है । दोनों पतियों में तुलनात्मक भाव की मजबूरी शोभा के जीवन में फैली है । वह पुर्नविवाह के साथ आनेवाली अनचाही बातों में से एक है ।

शोभा और मनोज का वैवाहिक जीवन एक दूसरे को झेलने की स्थिति को स्वीकार करके ही चल रहा था । मनोज और शोभा (पति-पत्नी) के संबंध तनाव भरे थे । शोभा मनोज के घर आकर नये जीवन की शुरुआत करना चाहती है --

' उसने मेरे घर में आकर एक नई शुरुआत की कोशिश की थी, पर वह शुरुआत सिर्फ उसके अपने लिए थी । उस शुरुआत में मुझे उसके लिए वही होना चाहिए था जो कि वह दूसरा था जिसकी वह सात साल आदी रही थी ।' [२]

पति - पत्नी होकर भी दोनों के बीच मेहमान का भाव छाया हुआ था ।

'अंतराल' मोहन राकेश का तीसरा उपन्यास है । इसमें भी विवाह की समस्या दिखाई देती है । यह नारी जीवन की विडम्बना ही है कि विवाह हेतु उसे सज-धजकर वर पक्ष के समक्ष न जाने कितनी बार अपने प्रदर्शन हेतु सामने जाना पड़ता है, 'खोजी दृष्टि' का सामना भी करना पड़ता है । वर पक्ष की प्रधानता

---

१ डॉ.सुषमा अग्रवाल - मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.३४४ ।

२ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१४ ।

को देखते हुए नारी निर्जीव मूक बनी अपना प्रदर्शन करने को बाध्य है, क्योंकि यही हमारी संस्कृति है, रीति-रिवाज है।

पुरुष तो बल और पौरुष का प्रतीक होता है और भौतिक आकर्षणों के जाल में उसे नारी ही खींचती है। नारी का रुप सौन्दर्य पुरुष को आकर्षित करता है। `अंतराल` उपन्यास में दो प्रेमियों की बद किस्मत की कहानी है। प्रोफेसर कुमार और उसकी प्रेमिका है लता जो की कालेज में पढती है। चांदनी रात का समय है बस्ती वही थी लेकिन घर दूसरा था। बाहर सेहन में किसी की भी साइकिल आकर रुकती थी, तो दिल की धड़कन बढ जाती थी। लता मुसकराती हुई अंदर आती अपनी बाहें उसके कन्धों पर रख देती।

ऐसे कुछ क्षणों में उसे अपने पर आश्चर्य भी होता था। क्या चीज थी ? लता कई बार पूरी-पूरी दोपहर उसके साथ गुजारती थी। उससे बात करती हुई या बात न करके उसके माथे, होठों, गालों को हाथों और होठों से सहलाती हुई। अपने - आपको भी वह पूरी तरह उसके हवाले छोड देती थी। लता का यह हठ उसे अच्छा भी लगता था, उस पर उसका विश्वास इससे और गहरा होता था। वह ब्याह की बात करता, तो लता गहरी नजर से उसे देखकर मुसकरा देती और कभी हाँ और कभी `ना` के रुप में सिर हिला देती। असल में वह क्या सोचती चाहती थी, इसका वह अनुमान नहीं लगा पाता था। एकाध बार उसने नाराज होकर बात की तो लता का चेहरा जिस तरह का हो आया, उसके होंठ जिस तरह फीके पड गये उससे कुमार जानता था लता अन्दर ही अन्दर एक दुविधा में है। घर में शासन करनेवाली उसकी माँ थी। वह माँ से डरती थी और माँ के कहने से एक सिविल इंजिनियर से उसकी शादी से इन्कार करना चाहते हुए भी यह बात जबान पर नहीं ला पाती थी। जब माँ ने वह बात कही थी तो लता गुमसुम होकर एक तरफ देखती रही थी। प्रोफेसर कुमार और लता के विवाह के लिए लता की माँ राजी नहीं थी। आखिर लता का विवाह माँ ने एक सिविल इंजिनियर से करवा दिया।

सब अंतरालों के बीच में श्यामा स्थित है। श्यामा की अपनी खुद की दुनिया उपन्यास में हमारे सामने आती है। श्यामा सुशिक्षित, आधुनिक

विचारों की स्त्री है। वह सताईस अठ्ठाईस साल की युवती है। आँखों में आत्मविश्वास की कमी नजर आता है, शायद निरंतर के अंतर्द्वन्द्वका नतीजा होगा। उसका बचपन मध्यप्रदेश के जंगली इलाके में बीता था। श्यामा तीन साल की थी तब उसकी माँ उसे छोड़कर हमेशा - हमेशा के लिए गुजर गयी --

"सिविल कोर्ट। ब्याह के रजिस्टर पर हस्ताक्षर करते हुए हाथ जरा सा काँप गया था। हस्ताक्षर बिगड गए थे। देखा था देव के माथे पर हल्की त्योरी पड गई है। पर कहा देव ने हँसकर इतना ही, हस्ताक्षर तो ऐसे कर रही हो जैसे पाँचवीं तक भी नहीं पढी।"[१]

श्यामा की शादी भी ऐसे लड़के से हुई जो शादी के लिए रजामंद नहीं था। श्यामा ने जिंदगी के ढेढ साल अपने पति के साथ गुजारे थे। देव उससे खुश नही था, फिर भी उसने उसे कभी फटकारा नहीं। देव उससे अपना संबंध केवल सहने के लिये मानता था। एक दिन अचानक देव की मृत्यु हो गई। शादी के बाद ढेढ साल में ही श्यामा विधवा बन जाती है। उसे एक बच्ची भी है। इसके अतिरिक्त अपनी सास और ननद की जिम्मेदारी भी उस पर आ पडी थी। श्यामा मण्डी के हायस्कूल में हेडमिस्ट्रेस का काम कर रही है। श्यामा कालेज में लेक्चरशिप हासिल करने के लिए एम.ए.करना चाहती है। अपने जीजाजी प्रोफेसर मल्होत्रा द्वारा वह कुमार से परिचित करायी जाती है। परिचय बढता ही जाता है। श्यामा कुमार को अपना हमदर्द समझाने लगती है। कुमार को पाकर श्यामा देव की मृत्यु से उत्पन्न रिक्तता को भरने का अहसास बतलाने लगती है, फिर भी वह अपने अतीत के दायरों में बंधी है। श्यामा अपने और कुमार के बीच बन रहे सम्बन्ध को खुलेपन में स्वीकार नहीं कर सकती।

श्यामा जब कौलेज में पढती थी तब प्रिन्सिपल गोपालजी ने उसके साथ जबरदस्ती भी करनी चाही थी। श्यामा किसी तरह खुद को छुडाकर भाग गयी थी। उसके बाद उसके जीवन में राजीव आया, श्यामा उसे चाहती थी। अपने मन

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.१४३।

में पति रुप में वह उससे जुड़ना चाहती थी, लेकिन अचानक उसकी शादी किसी और के साथ हो जाती है,तो श्यामा के दिल को बहुत बड़ी ठेस पहुँचती है और लगता है कि तेईस साल की उम्र में ही बुढ़ापा आ गया । श्यामा का कहना है कि -- ' देव के मन में मुझे लेकर कोई भावना थी तो केवल अधिकार की । '[1] दोनों के बीच की नयेपन की तथा परायेपन की रेखा मिट नही रही थी ।

अपने पति देव की मृत्यु के उपरान्त एक दिन श्यामा सोचती है कि - आखिर वह भी एक स्त्री है उसकी भी शारीरिक अपेक्षाये है । लेकिन भावनाओं की तीव्रतासे जब देव के सम्बन्धों का सिलसिला शुरु होता है,नया रुप लेता है,तो वह कुमार से जुड़ने से इन्कार कर देती है --

> ' कोई चीज है जिसे स्वीकार करने की सीमा पर पहुँचकर भी उसे वह बिन्दु नहीं मिल पाता जहाँ उसे स्वीकार किया जा सके । '[2]

श्यामा मन में सोचती है कि स्थायी गृहस्थी के लिए नारी का उन्मुक्त प्रेम अत्यंत आवश्यक है, नहीं तो वैसी गृहस्थी का टूट जाना ही श्रेयस्कर है । फिर भी देव ने वह नहीं तोड़ा । वह कुमार जैसा निर्मम नहीं हो सका कि श्यामा से सम्बन्ध ही तोड़ दे । श्यामा कुमार के साथ सम्बन्ध तोड़ना नहीं चाहती । उसे कहती है,हो सकता है कि वह उसे फिर कभी बुलाएँ लेकिन ऐसी वैसी बात सोचकर मत आना । श्यामा में आत्मविश्वास है । चाहे कुमार उसे गलत समझे लेकिन वह अपने विश्वासपर अडिग है । मन की उलझनों के कारण वह जरुर निराश होती है, लेकिन वह आत्महत्या की ओर प्रवृत्त नहीं होती । जीने की आस उसमें है । वह विधवा होने के नाते और दूसरा सम्बन्ध जोड़ने की मानसिक असमर्थता होने के कारण उसे लगता तो जरुर है कि मैं जी किस लिए हूँ । देव के बाद किसी और के साथ वैवाहिक जीवन बिताने की उसमें उम्मीद नहीं है ।

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.१२६ ।

२ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.२९ ।

वैसे तो आज के समाज में ऐसी श्यामाएँ बहुत कम मात्रा में पायी जायेंगी। निर्णय के वैयक्तिक अधिकार को नकारा नहीं जा सकता लेकिन भावना का ज्वार हट जानेपर श्यामा कुमार को सदा के लिए भुला भी देगी।

मोहन राकेश ने श्यामा के कोमलतम संयोगों की सूक्ष्मतासे उभारा है। वह एक विधवा स्त्री होकर भी अपने पहले पति के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहती। श्यामा और कुमार का स्मृति आलोक में एक दूसरे के साथ बँधे रहना आत्म-संवादों में गुँथे रहना और परस्पर के सूनेपन और अकेलेपन में एक-दूसरे को पूरक मानते हुए भी यथार्थ स्थिति आने पर स्वीकार न कर पाने की विवशता का मनोवैज्ञानिक धरातल पर अंकन किया गया दिखाई देता है। समग्र उपन्यास में नामहीन सम्बन्धों की तलाश दिखाई देती है। यहाँ श्यामा का प्रथम विवाह ही, उसके विधवा हो जाने पर पुनर्विवाह करने में समस्या बन बैठा है।

विधवा - समस्या —

आज भी हमारे समाज में विधवा समस्या अपने भयंकर रुप में उपस्थित है —

"यों तो वर्तमान समाज में समग्र नारी-जीवन पुरुष वर्ग के तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा-भावना का शिकार है,लेकिन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण की प्रतिमूर्ति एक मात्र विधवा ही है। विधवा का यह दयनीय जीवन विशेषकर मध्यवर्गीय परिवारों में बड़ा ही करुन है। किसी भी देश की उन्नति के लिये यह बात बड़े महत्व की है कि उनमें बसनेवाले प्रत्येक स्त्री और पुरुष को एक से सामाजिक अधिकार प्राप्त हो तथा स्त्री और पुरुष के शारीरिक तथा मानसिक विकास की आवश्यकताएँ सहज में पूर्ण हो सके। इसका अभिप्राय नैतिक आचारों की अवहेलना नहीं है। समाज व्यवस्था जब दूषित होती है तब समाज विरोधी शक्तियाँ तथा कथित नैतिकता की आवाज लगाकर समाज के गतिशील, चेतन एवं विकासशील तत्वों के मार्ग में रुकावट का काम करती अवश्य है, पर वे उन्हें पराभूत नहीं कर सकती।"[१]

१ डॉ.महेन्द्र भटनागर - समस्यामूलक उपन्यासकार - प्रेमचंद - पृ.१३३।

मोहन राकेश ने विधवा जीवन की विशेषताएँ तथा उन पर होनेवाले अत्याचार आदि पर प्रकाश डाला है। राकेश जी के 'अंतराल' उपन्यास में विधवा समस्या दिखाई देती है। श्यामा इस उपन्यास की नायिका के रुप में हमारे सामने आती है। उपन्यास में शुरु से उलझी श्यामा अंत में सुलझी सी लगती है। श्यामा सुशिक्षित,आधुनिक विचारों की नारी है। वह सताईस अट्ठाईस साल की युवती है। उसकी आँखों में आत्मविश्वास की कमी नजर आती है। शायद निरंतर के अंतर्द्वन्द्व का नतीजा होगा। उसका बचपन मध्यप्रदेश के जंगली इलाकों में बीता था। श्यामा तीन साल की थी तब उसकी माँ गुजर गयी थी, वह नौ-दस साल की उम्रतक काफी अकेली रहती थी। शादी भी ऐसे लड़के से हुई जो शादी के लिए रजामंद नहीं था। श्यामा ने जिंदगी के डेढ़ साल अपने पति के साथ गुजारे थे। देव उससे खुश नहीं था फिर भी उसने उसे कभी फटकारा नहीं।

देव,श्यामा से अपना सम्बन्ध केवल सहने का मानता था। शादी के बाद डेढ साल में ही श्यामा विधवा बन जाती है। उसे एक बच्ची भी है। बच्ची के अतिरिक्त अपनी सास और ननद की जिम्मेदारी भी उसपर आ पड़ी थी। अब वह मण्डी के हायस्कूल में हैड-मिस्ट्रेस का काम कर रही है। कौलेज में लेक्चर - शिप हासिल करने के लिए वह एम.ए.करना चाहती है। अपने जीजाजी प्रो. मलहोत्रा द्वारा वह कुमार से परिचय बढ़ती जाती है। श्यामा कुमार को अपना हमदर्द समझाने लगती है। कुमार को पाकर श्यामा देव की मृत्यु से उत्पन्न रिक्तता को भरने का अहसास बतलाने लगती है,फिर भी वह अपने अतीत के दायरों में इतनी बंधी है कि मुक्त हो ही नहीं पाती। श्यामा को अपने बीते वैवाहिक जीवन के प्रति खीझ और असंतोष है। वह चाहती है कि देव जिंदा हो जाय,चाहें एक दिन के लिए ही,वह अपने मण की बातें खुलकर बता देगी। यह केवल सह पाने का सिलसिला तो खत्म हो जाएगा। देव से वह आज भी न्याय के लिए आस लिए बैठी है —

"मैं आज भी उसे अपने सामने जीवित देखना चाहती हूँ। उसकी मृत्यु सचमुच मुझसे स्वीकार नहीं होती।"[1]

देव की मृत्यु के बाद भी वह उसे भूला नहीं सकी। वह कुमार के साथ होती तो भी उसके चेहरे का एक हिस्सा काफी दूर और तटस्थ जान पड़ता था। श्यामा को पहली बार कुमार ने अपनी बाहों में जकड लिया तो बाहों में कसे श्यामा के शरीर को लेकर एक साथ विरोध और आत्मसमर्पण की अनुभूति हो गयी। श्यामा दोहरी मन स्थिति में जी रही है। फिर भी वह कहती हैं

"भावना साथ दे तो मैं किसी भी तरह के आवरण को हीन नहीं समझती उतने कट्टर पंथी संस्कार मेरे शुरु से नहीं रहे।"[2]

यहाँ राकेश के आधुनिक विचारों की झाँकी मिलती है। राकेश स्त्री को परंपरा से चली आयी खोखली नैतिकता में नहीं जुड़ने देते।

डॉ.धनानन्द जदली ठीक ही लिखते है —

"श्यामा विधवा होने पर भी आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करती है। देव से मुक्त होकर कुमार को स्वीकार करने का अन्तर्द्वंद्व मानसिक धरातल पर निरन्तर चलता है। मानसिक धरातल पर वह कुमार से अन्त तक जुडी रहती है क्योंकि उसे अन्तर से स्वीकार कर चुकी है। इससे श्यामा की वैचारिक आधुनिकता, प्रतिपादित होती है। कुमार को पति का स्थान नहीं दे पाती लेकिन नामहीन संबंध अवश्य देती है।"[3]

'न आनेवाला कल' यह राकेश जी का दूसरा उपन्यास है इसमें भी विधवा समस्या दिखाई देती है। इस उपन्यास का नायक है मनोज सक्सेना। शोभा मनोज सक्सेना की पत्नी और आधुनिक नारी है। शोभा का मनोज से

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.७१।
२ - वही - ,, पृ.७० ।
३ डॉ.धनानन्द जदली - मोहन राकेश व्यक्ति एवं कृतित्व - पृ.३२४ ।

पुनर्विवाह हुआ है। शोमा अपना वैवाहिक जीवन सात साल तक जीकर पति की मृत्यु के बाद मनोज को स्वीकारती है। अपने पति से उसका बेबनाव या झगड़ा नहीं था, लेकिन उसकी आकस्मित मृत्यु उसे नयी शुरुआत के लिए मजबूर करती है। यह मजबूरी सारे उपन्यास पर धुंध के समान फैली हुई है। मानवीय सम्बन्धों की टूटने की प्रक्रिया इतने गहरे में जा धसी है कि वहाँ से ऊपर उठने की आकांक्षा तीव्र होकर भी आखिर हाथ कुछ नहीं लगता। मनोज का अलगाव शोमा से शुरु से है फिर भी जुडे रहने की प्रक्रिया जारी है। दोनों अपनी अपनी कमी को पूरा करने के लिए, अपने अकेलेपन को भरने के लिए शादी करते हैं, फिर भी सच्चे अर्थ में पति पत्नी नहीं बन पाते। दोनों के बीच शोमा पहला पति हरदम उपस्थित न रहकर भी स्थित रहता है। दोनों पतियों में तुलनात्मक भाव की मजबूरी शोमा के जीवन में फैली है। पुनर्विवाह के साथ आनेवाली अनचाही बातों में से वह एक है। ये ऐसी मजबुरियाँ हैं, जिन्हें झेलना या तोडना दो ही रास्ते शोमा के सामने रहते हैं।

शोमा की नये जीवन की शुरुआत आनेवाले कल के लिए थी। अपना भूत वह भूलना चाहती है लेकिन भूल नहीं सकती। वह मनोज के घर आकर नये जीवन की शुरुआत करना चाहती है। शोमा और मनोज दोनों पति पत्नी होकर भी दोनों के बीच मेहमाना भाव छाया हुआ था।

शोमा ऊबकर जब सुरजा पहले पति के घर जाती है तो वहाँ से लिखे पत्रों में अपने मन की कसक, कुंठा कह डालती है। पुनर्विवाह करके उठाया कदम उसे अब गलत प्रतीत होता है। वह सोचता है कि अब तो जीने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। न साधन, न सम्बन्ध।

शोमा पुरानी चीजोंसे नफरत करती है। वह एकदम ताजे नए और अपने तरीके से जिंदगी जीना चाहती है। अलमोनियम के फूलदान, टेबल, लैम्प आदि नयी चीजों को लेकर वह नयी जिंदगी की शुरुआत करना चाहती थी। शोमा में जीने की आस है। एक जिंदगी उसे रास न आती यही वह जीवन की पटरी बदलकर जीना चाहती है। उसे जीने में आस्था है। आत्महत्या मौत जैसी बातों से वह डरती है। आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ मानव मन को संत्रस्त कर देती

है और अस्तित्व की समस्या बहुत सारे उलझनों को ढोती रहती है। इन सबके बीच शोमा के तड़पते अंतर मन के अंतर्द्वन्द्व का मार्मिक चित्रण लेखक ने किया है।

आधुनिक काल में नारी को मिली आजादी और विधवा विवाह के लिए प्राप्त ढाढस शोमा में पूरी तौर पर मौजूद है।

<u>यौन-समस्या --</u>

मनुष्य समाजशील प्राणी है और वह समाज सुधार का भी प्रयास कर रहा है। नैतिकता के बारे में मूल्य बदलते जा रहे हैं। आज का समाजशील मानव शिक्षित होने के साथ साथ अत्याधुनिक बनता जा रहा है। यौन समस्या, आज जन साधारण की समस्या बन गई है। आज यौन नैतिकता पढ़े लिखे समाज में रुढ नहीं है। पहले विवाह एक ऐसी व्यवस्था थी जो एक नारी पुरुष से यौन सम्बन्ध रखती थी। आज भारतीय समाज में बहुत सी युवतियाँ जीवन भर कुँआरी रहकर अपने यौन सम्बन्धों में स्वतन्त्र रहती है। यौन सम्बन्धी यह स्वतन्त्रता भली समझी जाए या बुरी, इस विवाद के बारे में अधिक चिंतन नहीं हुआ है। न ही यौन सम्बन्धो के बारे में ज्यादातर सोचने की आवश्यकता है। क्योंकि परिवार और व्यक्ति का सम्बन्ध भी टूट रहा है। पति-पत्नी के सम्बन्धों में भी दरार पैदा हो गई है।

राकेश जी ने अपने तीनों उपन्यासों में यौन सम्बन्धों को आवश्यकता से अधिक उभारा है। `अँधेरे बंद कमरे` की `सुषमा श्रीवास्तव` एक आधुनिक नारी है और पत्रकार भी है। सुषमा मधुसूदन से प्यार करती है। मधुसूदन भी एक पत्रकार है। सुषमा मधुसूदन से प्रेम करती है, वह उसी के साथ विवाह भी करना चाहती है। सुषमा मधुसूदन के साथ यौन सम्बन्ध रखती है ?

उसी तरह `न आनेवाला कल` उपन्यास में बीनी हाल है, बीनी हाल और मनोज का संबंध भी नामहीन संबंध है, समाज में जिसे नैतिकता, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध आदि बड़े बड़े नाम दिये जाते हैं। बीनी दूसरो को साधन बनाकर अपने मन को बहला देती है। समाज की वह बिलकुल परवाह नहीं करती। बीनी का बहुत से लोगों के साथ उसका शारीरिक संबंध है।

राकेश जी ने `अंतराल` उपन्यास में यौन सम्बन्धी समस्या की आधुनिक विचारधाराएँ स्पष्ट कर दी है।

`अंतराल` उपन्यास यौन समस्यापर ही आधारित है। इस उपन्यास में यौन - चेष्टाएँ देखने को मिलती हैं। `लता` अविवाहित होते हुए भी समाज की दृष्टि से अधिक छूट ले रही है। श्यामा और कुमार की मन:स्थिति से अनेक बार वासना का संकेत मिलता है। कुमार जब श्यामा की पीठ की ओर देखता है तो वह सोचता रहता है।

इसमें श्यामा और कुमार के वासनामय सम्बन्धों का काफी वर्णन है। समाज में सैक्स के बारे में आधुनिक युग में जो नैतिक मूल्य है। `अंतराल` के पात्रों द्वारा उसका वर्णन राकेश जी ने किया है।

यौन - सम्बन्ध शारीरिक आवश्यकता पर टिके हुए हैं। देव और श्यामा का सम्बन्ध केवल शरीर तक ही सीमित रहता है। कुमार और उसकी अनाम पत्नी का सम्बन्ध भी केवल शरीर तक ही सीमित रहता है। इस उपन्यास में और एक पात्र है सीमा। सीमा भी नवयुवती है अत: अगर उसके मन में भी यौवन की चेष्टाएँ हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

`अंतराल` में अन्य नारियाँ भी मिलती हैं जिनमें रंजू, रामेश्वरी स्कूल की अध्यापिकाएँ हैं लेडी डॉक्टर बत्रा की आकस्मिक मृत्यु का उल्लेख भी उपन्यास में किया गया है जिसको लेकर कई तरह की चर्चाएँ है --

> `इतनी सुन्दर हँसमुख लड़की शाम तक रोज की तरह अस्पताल में काम कर रही थी, और सुबह उठने पर पता चला कि शरीर पर तेजाब छिड़कर उसने आत्महत्या कर ली।` [१]

असल में यह आत्महत्या नहीं थी। डॉ. दुबे ने उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर लिया था और यह राज वह किसी को न बताये इसलिए उसने उसकी हत्या की। हत्या करके साबित यह कराया गया लेडी डॉक्टर बत्राने आत्महत्या की।

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.११३।

यहाँ यौन भी समस्या बन गया है। अपनी यौन की तृप्ती के लिए कुछ लोग नारीयों के साथ इसी तरह का व्यवहार करते है जिस तरह व्यवहार डॉ. दुबे ने लेडी डॉक्टर बत्रा के साथ किया। लेडी डॉक्टर बत्रा की मौत डॉ.दुबे की यौन तृप्ती की इच्छा के कारण ही हुई अत: स्पष्ट है की यौन (सेक्स) आज समस्या के रुप में उभर आया है।

संक्षेप में यही कह सकते हैं कि आज के हमारे नैतिकता से युक्त समाज में यौन एक समस्या है जिसे राजेश जी ने अपने तीनों उपन्यासों में चित्रित किया है।

निष्कर्ष --

मोहन राकेश ने अपने उपन्यासों में उपर्युक्त समस्याओं का सच्चाई के साथ चित्रण किया है। परंतु असफल दाम्पत्य जीवन की समस्या पर राकेश ने अपनी दृष्टि जितनी केन्द्रित की है उतनी किसी भी समस्यापर केंद्रित नहीं की है। क्योंकि राकेश जी का समग्र वैवाहिक जीवन ही असफल था। राकेश को अपने जीवन में तीन विवाह करने पड़े। राकेश का प्रथम विवाह हुआ सुशिला से। यह विवाह राकेश के मन के अनुकूल नहीं था। उनकी पत्नी में बहुत अहं था। वह उनके बराबर पढी लिखी थी। उनसे ज्यादा कमाती थी। अत: दोनों का साथ अधिक देर नहीं रह पाया और परिणाम ,विवाह विच्छेद में बदल गया। धीरे-धीरे राकेश लेखन में प्रसिधि पाने लगे थे। एक दिन 'पुष्पा' को राकेश ने अपनी पत्नी के रुप में चुन लिया। पुष्पा उनके एक मित्र की बहन थी। परन्तु राकेश का यह चुनाव भी गलत निकला,क्योंकि पुष्पाजी अधिक पढी लिखी नहीं थी। राकेश की पहली पत्नी में हठ और अहं था तो दूसरी में दीनता थी। अत: इस विवाह ने भी उनके मन को गहरी चोट पहुँचायी। उनकी दोनों शादियाँ टूट गई। राकेश जी ने तीसरा विवाह अनीता के साथ किया। अनीता का साथ मिलने पर राकेश खुश हुये। इस विवाह के उपरान्त उन्हें जिस घर की तलाश थी वह घर उन्हें मिल गया। असफल दाम्पत्य जीवन

की असंगतियाँ उनकी भोगी हुई वस्तु थी । फलत: अपने उपन्यासों में उनकी दृष्टि अधिकतर इस विषयपर केंद्रित रही है ।